परमेश्वर का वचन

परमेश्वर का वचन

परमेश्वर चाहता है कि उसका वचन हमारे हृदय और मुँह में रहे।
(व्यवस्थाविवरण 30:11-14)

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलौर**
प्रथम संस्करण अक्तूबर 2011

अनुवाद एवं प्रूफरीडिंग : सुनील एस. लाल
मुख पृष्ठ एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : करुणा जयरोम, बाईफेथ डिज़ाइन्स

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु

इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - God's Word)

परमेश्वर का वचन

परमेश्वर का वचन

विषय सूची

1. परमेश्वर का वचनः हमारे विश्वास की नींव 1

2. परमेश्वर का वचनः इसकी शुद्धता और सामर्थ्य 11

3. परमेश्वर का वचनः एक चमत्कारी बीज 21

4. परमेश्वर के वचन पर मनन करना 31

1

परमेश्वर का वचनः हमारे विश्वास की नींव

हमारे मसीही जीवन में एक बहुत महत्त्वपूर्ण तत्त्व है, एक इतना महत्त्वपूर्ण जो हमारे मसीही जीवन के अनुभव की गुणवता को निश्चित करता है। वह परमेश्वर का वचन है। हमारी परिपक्वता का स्वर जिसमें हम बढ़ते हैं और परमेश्वर की गहराईयों में पहुँचते हैं, यह इस बात के द्वारा निश्चित होते हैं कि हम उसके वचन को अपने जीवन में कितना स्थान देते हैं। चाहे हम विजय में चलें अथवा न चलें और आशीष के परिणाम जिन्हें हम अनुभव करते हैं, परमेश्वर के वचन के द्वारा प्रभावित होते हैं जिसे हम स्वीकार करने के योग्य और लगातार अपने प्रतिदिन के जीवन में लागू करते हैं।

तौभी ऐसे संसार में, जहाँ लोग देखी हुई वस्तु पर विश्वास करते हैं बहुत से लोग एक पुरानी पुस्तक की विषयवस्तु पर अपना ध्यान देने को तैयार नहीं हैं। कोई क्यों इस प्राचीन व्यक्ति पुस्तक के भागों, शब्दों को दोहराने के साथ व्यतीत करे, जिसे कुछ लोग इसे सामाजिक, सांस्कृतिक और चारित्रिक रूप से अनुपयुक्त मानते हैं? और दुःख की बात है कि विश्वासियों में भी, मात्र “शांत समय” की परम्परा को पूरा करने के अतिरिक्त बहुत लोग ऐसे नहीं पाये जाते जिन्हें परमेश्वर के लिखित वचन के प्रभाव की गहराई की समझ प्राप्त हो, जो एक व्यक्ति के जीवन को प्रभावित कर सकता है। यह सत्य है कि आरम्भ में वचन जीवन रहित प्रतीत हो सकता है बल्कि यहाँ सरसरी तौर से पढ़ने वाले को बोरिंग लग सकता है। परन्तु उन लोगों के लिए जो इसकी विरासत की सामर्थ्य और उस स्थान को जो परमेश्वर ने स्वयं अपने वचन को अपने लोगों के जीवन में स्थापित होने के लिए दिया है, उनके लिए वचन जीवित है। उनके लिए यह वचन सामर्थ्य, शान्ति, आशा, विश्वास, निर्देश और बुद्धि का स्त्रोत है। उन्होंने अपने सम्पूर्ण वर्तमान और भविष्य को इस बात पर निर्भर कर दिया है जो परमेश्वर का वचन कहता है।

जीवन के तूफानों के मध्य वे जानते हैं कि वचन उनको जीवित रखेगा और उन्हें थामे रहेगा। बीमारी के मध्य वे जानते हैं कि वचन चंगाई और छुटकारा लाएगा, चुनौतियों और दवाबों के मध्य वे विश्वास के साथ खड़े होते हैं उस बात पर जो वचन प्रतिज्ञा और एक दृढ एवं अटल समर्पण उत्पन्न किया है।

हमारे हृदय की इच्छा यह है कि आप में से प्रत्येक, जिन तक हम इन लिखे हुए पृष्ठों के द्वारा पहुँच सकते हैं, ऐसे स्थान तक प्रभु के साथ लाए जाएं। यदि आपने कुछ अंश तक परमेश्वर के वचन की समझ प्राप्त कर ली है तो हमारी इच्छा है कि आप और सुदृढ़ और उत्साहित हों।

प्रचार की मूर्खता के द्वारा

"क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार यह संसार अपने ज्ञान से परमेश्वर को न जान सका तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों का उद्धार करे" (1 कुरिन्थियों 1:21)।

परमेश्वर ने अपने ज्ञान में नियुक्त किया है कि मनुष्य की अनन्त नियति साधारण सुसमाचार के प्रचार के द्वारा निर्धारित हो। इस पर ध्यान दीजिए परमेश्वर ने अलौकिक साधनों को नहीं चुना कि वे "मसीह का शुभ संदेश, ले जाएं, जो उद्धार पाने वालों के लिए उद्धार की सामर्थ है।" इसके बजाए इस "मूर्खतापूर्ण" प्रचार के द्वारा, जिसे परमेश्वर ने ठहराया कि है मरनहार और गिरने योग्य शरीरों के द्वारा वह खोए हुए को जीतें। इसलिए प्रचार अथवा सुसमाचार प्रचार बहुत महत्वपूर्ण है। जैसा प्रेरित पौलुस कहते हैं, कुछ लोग संदेश और इसके प्रचार को मूर्खता समझते हैं। परन्तु जो बुलाए हुए हैं उनके लिए यह संदेश और इसका प्रचार मसीह को प्रकट करता है जो परमेश्वर की सामर्थ्य और ज्ञान है (पद 24)। ठीक इसी प्रकार से, परमेश्वर ने ठहराया है कि लिखित वचन जो परमेश्वर की सामर्थ और ज्ञान है, एक विश्वासी के जीवन में लाया जाता है। यह एक रहस्यमय बात प्रकट होती है कि एक पुस्तक जिसे हम बाइबल कहते हैं उसके पन्नों पर जो शब्द लिखे हुए हैं, उनके द्वारा हमारे जीवनों में अलौकिक सामर्थ्य और ज्ञान डाला जाता है। कैसे साधारण

शब्द, वे शब्द जिन्हें हम अपने दिन प्रतिदिन के जीवन में प्रयोग करते हैं अचानक अलौकिक मूल्य धारणकर लेते हैं केवल इसलिए कि वे बाइबल में लिखे हुए हैं? यद्यपि शब्द अपने आप में साधारण हैं, परन्तु सत्य जो वे प्रकट करते हैं वे अलौकिक हैं। यद्यपि यह मनुष्य ही था जिसने इन शब्दों को इकट्ठा किया, परन्तु यह परमेश्वर ही था जिसने विचारों को प्रेरित किया। यह केवल इन विचारों के समझने और उन्हें स्वीकार करने अथवा वह सत्य जो हम तक पहुँचाए जाते हैं, लिखित शब्दों के द्वारा हम तक पहुँचाए जाते हैं, वह हमारे जीवन में प्रवेश करने लगते हैं और हम परमेश्वर का ज्ञान और सामर्थ्य अनुभव करने लगते हैं।

सम्पूर्ण धर्मशास्त्र 'परमेश्वर के द्वारा प्रेरित है'

"और बचपन ही से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है जो मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा तुझे उद्धार पाने के लिए बुद्धि दे सकता है, सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और शिक्षा, ताड़ना, सुधारने और धार्मिकता की शिक्षा के लिए उपयोगी है" (2 तीमुथियुस 3:15-16)।

जब प्रेरित पौलुस "पवित्रशास्त्र" का सन्दर्भ देता है तब वह लिखित वचन के बारे में बोलता है। वह लिखित वचन को ही अलौकिक अधिकृति प्रदान करता है जब वह कहता है, "समस्त धर्मशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है।" यद्यपि मनुष्य ने उनके शब्दों को लिखा, परमेश्वर संदेश का स्त्रोत और प्रेरणा था। प्रेरित पतरस इसको थोड़ा भिन्न प्रकार से कहता है। "पर पहले यह जान लो कि पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई परन्तु लोग पवित्र आत्मा की प्रेरणा द्वारा परमेश्वर की ओर से बोलते थे" (2 पतरस 1:20,21)। सारा धर्मशास्त्र एक प्रकार से भविष्यवाणी है। क्योंकि उनका जन्म परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से हुआ है। यह एक सार्वभौमिक सत्य है जो लिखित वचन को अलौकिक मूल्यवान बनाता है। इस तथ्य में अपने हृदय की गहराई से विश्वास करने के द्वारा यह आपके परमेश्वर के वचन के प्रति विचार को पूर्ण रूप से बदल सकती है। यदि आप

वास्तव में विश्वास करते हैं कि सारा पवित्रशास्त्र परमेश्वर के द्वारा प्रेरित है तब आप अपने जीवन में परमेश्वर के वचन को उच्च प्राथमिकता देंगे। आप अपनी बाइबल यह जानते हुए खोलेंगे कि इस विश्व का परमेश्वर अपने विचार आपको बता रहा है। अपनी असीम बुद्धि में से उसने चुना है कि उतना विशेष परिमाण जो वह समझता है कि हमारे इस पृथ्वी के जीवन में आवश्यक है और प्रर्याप्त है, उसने इस पुस्तक के पन्नों पर रखा (भरा) है (टपकना)। पवित्रशास्त्र शिक्षा (सिद्धान्त), ताड़ना, सुधार और निर्देश देते हैं।

धर्मशास्त्र परमेश्वर तक पहुँचने की खिड़की

"मेरी आँखे खोल दे कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्‌भुत बातें देख सकूँ" (भजनसंहिता 119:18)।

पवित्रशास्त्र हमें जीवित परमेश्वर की पहचान प्रदान करता है। वह परमेश्वर का स्वभाव, चरित्र, गुण और उसका हृदय प्रकट करता हैं। पवित्रशास्त्र के पन्नों पर हम पाते हैं कि परमेश्वर कौन है, वह क्या करता है, उसकी भावनाएं और उसकी इच्छाएं क्या हैं। परिणामस्वरूप पवित्रशास्त्र के ही द्वारा हम परमेश्वर का जानते हैं और इस प्रकार हम उसके साथ "व्यक्तिगत" सम्बन्ध बनाते हैं। सम्बन्ध ज्ञान पर आधारित होता है जहाँ व्यक्तिगत ज्ञान नहीं है वहाँ सम्बन्ध नहीं हो सकता है। आगे, सम्बन्ध की गहराई ज्ञान अथवा निकटता जो प्राप्त की जाती है वह उसकी गहराई पर आधारित है। इसलिए गहरा और निकटतम सम्बन्ध जीवित परमेश्वर के साथ होने के लिए एक व्यक्ति को उसको निकटता से जानना होगा जैसा उसे पवित्रशास्त्र में प्रकट किया गया है। बाइबल के पन्नों को खोलना उतेजना पूर्ण है क्योंकि वे परमेश्वर तक पहुँचने की हमारी खिड़की है। जब हमारी आँखे "लाइनों के उस पार" देखने के लिए खुलती हैं जिन्हें हम पढ़ते हैं। तब हम अपने परमेश्वर की वैभव और गौरव की समझ प्राप्त करते हैं। परमेश्वर के बारे में अपनी समझ को किसी अन्य वस्तु पर आधारित करना, चाहे यह अनुभव हो, दूसरे के विचार हों आदि। वह सदैव ठीक नहीं होंगे। यह सत्य है कि परमेश्वर

अपने आपको अन्य स्थानों पर भी प्रकट करता है। जैसे अपनी सृष्टि में। लेकिन जो भी सूचना हम अन्य स्त्रोतों से प्राप्त करते हैं वह सबसे पहले लिखित पवित्रशास्त्र के प्रकाश में अवलौकित होनी चाहिए।

धर्मशास्त्र-हमारा स्तर, हमारा नमूना

"तू अपने वचन पर मेरे कदम स्थिर कर तथा किसी भी अधर्म को मुझ पर प्रभुता न करने दे" (भजनसंहिता 119:133)।

ऐसे वचन में जहाँ लोगों के पास ऐसे निश्चित स्तर नहीं है कि क्या गलत है और क्या सही, हम परमेश्वर के वचन को अपना स्तर चुनते हैं हम उस पर आधारित हैं जो परमेश्वर का वचन जिसे सही और अच्छा कहता है हम भी उसे सही और अच्छा मानते हैं। वचन जिसे गलत मानता है उसी प्रकार से हम भी उसे गलत मानते हैं। हम उसे बुद्धिमत्ता (तर्क) नहीं देते, हम "बौद्धिक" नहीं बनाते (हम खुले विचारों वाले नहीं बनाते) अथवा परिप्रेक्षता (सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से नहीं बनाते), परमेश्वर के वचन के स्तरों से दूर नहीं जाते। परमेश्वर के लिखे हुए वचन से कम हम किसी और बात को नहीं मानते।

परमेश्वर का वचन हमारा मार्गदर्शक सिद्धान्त है। हम अपनी जीवनों को परमेश्वर के वचन में दिए गए विवरण के अनुसार बनाते हैं। पतियों, पत्नियों, माता-पिता, बच्चों, नौकरी देने वाले, नौकरी करने वाले, मसीही सेवकों और सामान्य रूप से मसीही विश्वासियों के लिए वचन में व्यवहार के तरीके प्रस्तुत किए हैं। हम पवित्रात्मा की सामर्थ्य से भरसक प्रयास करते हैं कि हमारा व्यवहार, हमारी जीवन पद्धति, हमारे मूल्य, हमारे विश्वास, हमारे निशाने और उद्देश्य वचन के सिद्धान्तों के अनुसार बनाएँ। हम अपना सारा जीवन उसके वचने के अनुसार निर्देशित करते हैं।

धर्मशास्त्र- हमारा अधिकार

"मैंने अपने पैरों को प्रत्येक बुरे मार्ग से रोक रखा है कि तेरे वचन पर चलूँ" (भजनसंहिता 119:101)।

हम परमेश्वर के वचन को अंतिम अधिकारी मानते हुए उसकी अधीनता में रहते हैं। चाहे मनुष्य के बनाए हुए तरीके अथवा नियम हमें न सुधारे, हम परमेश्वर के वचन के द्वारा सुधारने के लिए अपने आपको उसके अधीन करते हैं। हम प्रतीक्षा नहीं करते कि कोई हमारी गलती हमें बताए। यद्यपि यह समय समय पर आवश्यक है। यदि हम अपने आपको कुछ ऐसा करते हुए पाते हैं जिसे वचन गलत कहता है, हम परिवर्तन करने के लिए तैयार होते हैं ताकि हम वचन का पालन कर सकें। हम अपने जीवनों में अनुशासन का अभ्यास करने का चुनाव करते हैं ताकि हम वचन के साथ चल सकें। परमेश्वर के वचन के अधीन होना ही स्वयं परमेश्वर के अधीन होना है। पवित्रशास्त्र के वचन की शिक्षा के विरुद्ध बलवा करना स्वयं परमेश्वर के विरोध में बलवा करना है। प्रभु यीशु ने कहाः "जो मेरा तिरस्कार करता है, और मेरे वचन को ग्रहण नहीं करता, उसको दोषी ठहराने वाला तो एक है–मैंने जो वचन कहा है, वही अंतिम दिनों में उसे दोषी ठहराएगा (यूहन्ना 12:48)। परमेश्वर का वचन ही वह कानून होगा जिसके अनुसार बस मनुष्यों का न्याय होगा।

यही व समय है कि परमेश्वर के लोग उसके लिखित वचन के प्रति आदरणीय भय विकसित करे। हम परमेश्वर के अनुयायी नहीं हो सकते यदि हम अपने जीवनों में उसके वचन की अधीनता में नहीं रहते। हम मजबूत विश्वासी नहीं हो सकते यदि हम वह सब करते हैं जो वचन के विरोध में है, केवल इसलिए कि वे बातें हमारे शरीर के लिए आनन्दायक है, अथवा हमारे तक–वितर्क को स्वीकार्य हैं। हम विश्वासी होने के नाते अपने आपको प्रत्येक बुराई से बचाते हैं और उसके वचन की रेखा में ढालते हैं, क्योंकि वह ही अन्तिम अधकारी है।

धर्मशास्त्र और मानवीय बुद्धि

"परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातों को ग्रहण नहीं करता क्योंकि वे इसके लिए मूर्खतापूर्ण हैं और वह उन्हें समझ नहीं सकता क्योंकि उनकी परख आत्मिक रीति से होती है" (1 कुरिन्थियों 2:14)।

"कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमश्ेवर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पूर्ण पहिचान में ज्ञान और प्रकाशन की आत्मा दे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे मन की आँखें ज्योतिमर्य हो" (इफिसियों 1:17,18)।

हम अपनी बुद्धि की समक्षता के द्वारा धर्मशास्त्र को पढ़ते हैं और उसके वचनों का अर्थ समझते हैं। हम उन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को भी पहचानते हैं। जिनमें वे वचन लिखे गये है। एक विश्वासी के जीवन में मानवीय बुद्धि का एक निश्चित स्थान है।

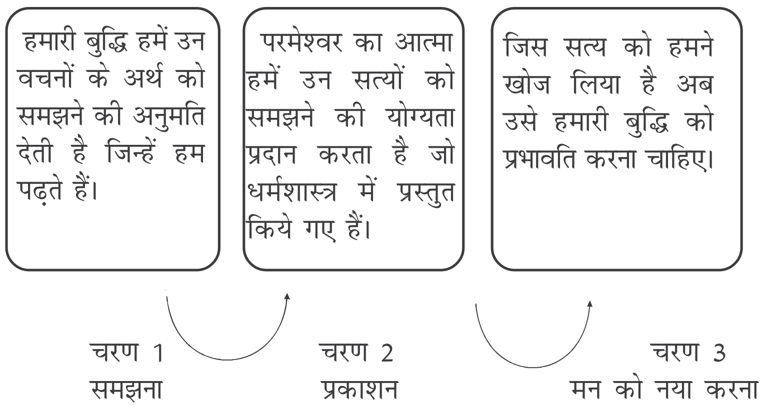

स्वाभाविक मनुष्य अपने स्वाभाविक मस्तिष्क में उन आत्मिक सत्यों को पहचानने में असमर्थ है जिन्हें परमेश्वर का आत्मा वचन के द्वारा प्रकट करता है। यह आत्मिक दृष्टि (ज्ञान) ही है जिसके द्वारा आत्मिक वस्तुएं प्राप्त की जाती हैं। यहीं पर मानवीय बुद्धि समाप्त हो जाती है और हमें अब पवित्र आत्मा के कार्य पर निर्भर होना चाहिए। पवित्र आत्मा प्रकाशन का आत्मा है। वह हमें आत्मिक सत्य जो वचन में है, देखने के योग्य बनाता है। वह हमें उन शब्दों के अर्थों के पार ले जाता है जो पुराने व्यक्तियों के द्वारा लिखे गए हैं वह परमेश्वर के मौलिक विचारों की ओर ले जाता है। परमेश्वर के विचारों में और मनुष्यों के विचारों में बहुत बड़ा अन्तर है। प्रभु परमेश्वर ने कहा: "क्योंकि मेरे और तुम्हारे मार्गों में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में आकाश और पृथ्वी का अन्तर है" (यशायाह 55:9)। प्रकाशन, बौद्धिक समझ से आत्मिक समझ की ओर जाने की क्रिया ही है। प्रकाशन के द्वारा ही हम परमेश्वर के विचारों को प्राप्त करते हैं। अब हम आत्मिक सत्यों को

समझने लगते हैं। जब एक व्यक्ति आत्मिक सत्य का प्रकाशन नहीं प्राप्त करता है (जिसका अर्थ है वचन की आत्मिक समझ प्राप्त नहीं करता), यीशु ने कहा, "तो वह दुष्ट आकर जो कुछ उसके हृदय में बोया गया था, छीन ले जाता है" (मत्ती 13:19)।

जब आप प्रकाशन के द्वारा आत्मिक समझ प्राप्त रकते हैं तब आप अपनी आशा के विषय पूछे जाने पर प्रत्येक पूछने वाले को सदैव नम्रता व श्रद्धा के साथ उत्तर देने को तत्पर रहते हैं (1 पतरस 3:15)।

प्रकाशन से कार्य की ओर बढ़ना

"परन्तु अपने आपको वचन पर चलने वाले प्रमाणित करो, न कि केवल सुनने वाले जो स्वयं का धोखा देते हैं। यदि कोई मनुष्य वचन का सुनने वाला हो उस पर चलने वाला न हो तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना प्राकृतिक मुख दर्पण में देखता है" (याकूब 1: 22,25)।

जो आत्मिक सत्य हम पर प्रकट किए गए हैं अब उनका प्रभाव बुद्धि पर होना चाहिए। हमारे सोचने का तरीका, हमारा तर्क, हमारी समझ जो हमने प्राप्त की है उसके द्वारा प्रभावित और निर्देशित होना चाहिए। यह प्रक्रिया मन को नया करना कहलाती है। जब यह होता है तब हम लगातार उस प्रकाशन के अनुसार जीने के योग्य हो जाते हैं जो हमने प्राप्त किया है। बहुत से विश्वासी हैं जिन्होंने वचन में से बहुत वस्तुओं का प्रकाशन प्राप्त किया है। वे एक चरण से दूसरे चरण में पहुँच चुके हैं। तौभी उन्होंने अपनी बुद्धि को अनुमति नहीं दी है कि वह वचन के द्वारा प्रभावित हो। परिणामस्वरूप वह परमेश्वर के वचन के अनुसार नहीं जीते।

परमेश्वर का इरादा अपने वचनों को देने का यह है कि हम लगातार उनके द्वारा जीवन व्यतीत करे। उसने अपना आत्मा हमारे लिए उपलब्ध किया है ताकि वह वचन को समझने में हमारी सहायता करे। यद्यपि वचन का प्रकाशन प्राप्त करना अपने आप में कि उसकी सम्पूर्ण आशीषों आनन्द उठाने के लिए अपर्याप्त है। वही व्यक्ति जो प्रकाशन को

लगातार कार्यों में परिवर्तित करता है वही परमेश्वर के वैभव, जिसके विषय में उसने प्रतिज्ञा की है, चल सकेगा। हमारी चुनौती आपके लिए यह है कि आप पवित्रशास्त्र का ज्ञान प्राप्त करने के लिए पवित्र आत्मा पर निर्भर रहें। तब अपने मस्तिष्क को अनुमति दें कि वह उस प्रकाशन के द्वारा जिसे आप प्राप्त करते हैं, नया बनाए। और तब प्रकाशन को अपने प्रतिदिन के जीवन में अनुशसित कार्यों में ढालें। तब आप ऐसे व्यक्ति होंगे जैसा वचन कहता है कि जो कुछ वह करता है वह धन्य है।

वचन को अपने अन्दर अधिकाई से बसने दो

"मसीह के वचन को अपने हृदयों में बहुतायत से बसने दो, समस्त ज्ञान सहित एक दूसरे को शिक्षा और चेतावनी दो अपने हृदयों में धन्यवाद के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगाान और आत्मिक गीत गाओ" (कुलुस्सियों 3:16)।

परमेश्वर का वचन हमारे विश्वास की नींव है। यही आवश्यक साम्रगी है। हमारे आत्मिक उन्नति और परिपक्वता के लिए हमें मसीह में रहना है और उसके वचनों को हममें रहना है (यूहन्ना 15:7)। आपके लिए हमारी चुनौती यह है कि आप मसीह का वचन अपने अन्दर अधिकाई से बसने दे। पवित्रशास्त्र को खोजने, अध्ययन करने और उस पर मनन करने में अधिक समय बिताएं। पवित्र आत्मा से विनती करें कि वह आपको ज्ञान और प्रकाशन दे। अपने हृदय में प्रकाशन का ज्ञान अधिकाई से निवेश होने दें। अपने आत्मिक ज्ञान को उस उसके नए होने के द्वारा "जीवित" रखें अपने आपको बार-बार याद दिलाएं उन आत्मिक सत्यों के विषय में जिन्हें परमेश्वर का आत्मा आपकी समझ में लाता है। परमेश्वर का वचन व्यक्तिगत गानों, भजनों के लिए इस्तेमाल करें। अन्य विश्वासियों को भी वचन पढ़ाए और उत्साहित करें। वह प्रकाशन का ज्ञान जो आप में डाला गया है, उसका अभ्यास करें। इस प्रकार से आप दृढ़ नींव डाल सकेंगे जिस पर आप अपना मसीही अनुभव बना सकते हैं।

वह व्यक्ति जो वचन सुनता है और वैसा ही करता है, बाइबल बताती है कि वह उस व्यक्ति के समान है जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया (मत्ती 7:24,25)। आप किस प्रकार की नींव पर अपना जीवन बना रहें हैं?

2

परमेश्वर का वचनः इसकी शुद्धता और सामर्थ्य

यह मनीपाल, भारत में कॉलेज के उन अन्तिम चार वर्षों के दौरान की बातें हैं उस समय बहुत-सी अद्‌भुत बातें हुई। परन्तु एक सबसे महत्वपूर्ण बात यह हुई की परमेश्वर ने हममें से कुछ जवान लोगों को कॉलेज के सामान्य विद्यार्थियों को इस योग्य किया कि वे एक साथ मिलकर कुछ आधारभूत कार्य करें जो आगे चलकर एक सुदृढ़ मसीही संगति छात्र समुदाय के बीच में स्थापित हो सके यह सत्र के अन्त की बात है। हमारे बहुत से मित्र घर पर चले गये थे। यह जानते हुए कि छात्रावास के कमरे खाली होंगे, और वहाँ शान्ति होगी, मैंने निश्चय किया कि मैं कुछ और दिनों तक यहाँ रुककर प्रभु के साथ एकान्त में समय बिताऊँगा। मैं विशेषकर अपने भविष्य और उन वस्तुओं के विषय में जो मेरे सामने थी प्रार्थना के दौरान यशायाह 45:1-3 मेरी आत्मा में गहराई से छप गया।

"यहोवा अपने अभिषिक्त कुस्रू के विषय यों कहता है, मैंने उसके दाहिने हाथ को इसलिये थाम लिया है कि उसके सामने जातियों को दबा दूँ और राजाओं की कमर ढीली करूँ, उसके सामने फाटकों को ऐसा खोल दूँ कि वे फाटक बन्द न किए जाएँ। "मैं तेरे आगे-आगे चलूँगा और ऊँची-ऊँची भूमि को चौरस करूँगा, मैं पीतल के किवाड़ों को तोड़ डालूँगा और लोहे के बेड़ों को टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा। मैं तुझ को अन्धकार में छिपा हुआ और गुप्त स्थानों में गड़ा हुआ ध न दूँगा, जिससे तू जाने कि मैं इस्राएल का परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुझे नाम लेकर बुलाता है" (यशायाह 45:1-3)।

मेरे लिए यह मानो "कोने के सिरे के पत्थर" के समान-पद ठहरा जिसने मेरे हृदय में विशेष स्थान प्राप्त किया हैं। मैंने उसका अर्थ समझा और यह भी कि यह मेरे जीवन में कैसे लागू होंगे।

इस प्रतिज्ञा के भाग होने के नाते प्रभु ने कहा कि वह हमारे अगे जाएगा और द्वारों को खोलेगा और यह द्वार बन्द नहीं किए जा सकते। वे वर्ष जो बीत गए हैं, उस समय से लेकर ऐसे अनेक समय आए जब हमने "असम्भावनाओं" और "बन्द द्वारों" का समान किया। चाहे यह विश्वविद्यालय में प्रवेश और आर्थिक सहायता की बात हो, विदेश जाने के लिए वीजा प्राप्त करने की बात हो, 1993 की व्यक्तिगत आर्थिक विपत्तियों से उठते हुए और इस प्रकार की अन्य परिस्थितियों में हम इन वचनों के पास दुबारा आए और परमेश्वर के सामने खड़े होकर यह स्वीकार करने लगे कि जो उसने प्रतिज्ञा की है वह उसको पूरा भी करेगा। हमने पवित्रशास्त्र के इन वचनों को लिया है और जो अधिकार हमें यीशु से मिला है उसके द्वारा हमने उनको परिस्थितियों और हालातों के ऊपर बोला और हमने देखा कि परिस्थितियां बदल गईं। वे इतनी बदल गई की सामान्य मस्तिष्क में वह अटपटी लगी, बल्कि मूर्खतापूर्ण लगी। हम इन पदों कि शुद्धता और सामर्थ पर निर्भर रहे और हम इस बात की आनन्द के साथ गवाही दे सकते हैं कि परमेश्वर का वचन कभी असफल नहीं हुआ। हमारी तरह संसार में बहुत लोग हैं जो उन चुनौतियों की एक के बाद एक गवाही दे सकते हैं जिनका सामना किया और किस प्रकार उन्होंने अपना विश्वास केवल परमेश्वर के असफल न होने वाले वचन में रखा और किस प्रकार परमेश्वर ने अपने वचन की सामर्थ्य के द्वारा उनको जयवन्त किया!

एक स्थान है जहाँ हम आ सकते हैं। एक ऐसा स्थान जहाँ हम परमेश्वर के बहुमूल्य वचन को प्रेम कर सकते हैं और उसका आदर करते हैं। एक ऐसा स्थान जहाँ हमारे हृदय परमेश्वर के वचन की सामर्थ्य और गहराई में बिना किसी प्रश्न के पूर्ण विश्वास के साथ भर जाते हैं। एक ऐसा स्थान जहाँ हम उसके वचन को अन्य सभी वस्तुओं से अधिक सम्मान देते हैं। एक ऐसा स्थान जहाँ वचन हमारे चरित्र को परिवर्तित करता है, हमारी सोच को प्रभावित करता है और हमारे कार्यो का मार्गदर्शन करता है। एक ऐसा स्थान जहाँ हमारे हृदय आत्मिक समझ, जो वचन के द्वारा आती है, के लिए लालायित और भूखे हैं। एक ऐसा

स्थान जहाँ हम उसके वैभव को देखने के लिए लालायित हैं जैसा पवित्रशास्त्र में प्रकट किया गया है, एक ऐसा स्थान जहाँ पूर्ण आनन्द है परमेश्वर के वचन में हमारी प्रार्थना यह है कि हम में से प्रत्येक जन इस स्थान में लगातार रहने का आनन्द अनुभव करें।

परमेश्वर का सर्वप्रभुता सम्पन्न हाथ

"अहा!! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान कितने अगाध हैं। उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम्य हैं" (रोमियों 11:33)।

परमेश्वर के मार्ग "बहुत पुराने" अथवा मानवीय समझ से परे हैं। परमेश्वर का सर्वसत्ता सम्पन्न हाथ मानव इतिहास में अपना स्थान बनाता आया है। प्रायः ऐसे कार्यों में जो महत्वहीन और सन्देहयुक्त प्रतीत होते हैं। अधिकांशतः परमेश्वर के काम सांसारिक और सामान्य होते हैं तौभी परमेश्वर के हाथ की कलाकारी किसी देखने योग्य चमत्कार से कम नहीं है। वही परमेश्वर जिसने चट्टान में से पानी निकाला जब मूसा ने अपनी लाठी उस पर मारी उसी परमेश्वर ने बेजालेल और उसके सहकर्मियों के द्वारा कार्य किया जब वे जंगल में प्रार्थना का स्थान बना रहे थे (निर्गमन 31:1-11) मानव बुद्धि को यह बात स्वीकार करने में बहुत कठिनाई होती है कि जो कार्य बेजालेल व उसके कारीगरों की मण्डली कर रही थी वह परमेश्वर का ही कार्य था! यह परमेश्वर का आत्मा ही था जिसने इन कलाकारों को बुद्धि समझ और ज्ञान दिया ताकि वे प्रार्थना के स्थान के लिए सोने चान्दी और पीतल की कारीगरी कर सकें।

इस साधारण उदाहरण से हम दृढ़ता के साथ कह सकते हैं कि परमेश्वर साधारण लोगों के द्वारा अपने अलौकिक उद्देश्य पूरे करता है। ऐसा ही मसीही बाइबल की छियासठ पुस्तकों को लिखे जाने के विषय में है। परमेश्वर का सर्वसत्ता सम्पन्न हाथ पवित्रशास्त्र को एकत्रित करने और इसको घोषित करने की क्रिया में भी कार्यरत था। मानवीय मस्तिष्क ऐसे दावे पर प्रश्न कर सकता है। परन्तु हममें से उन लोगों के लिए जो यह समझते हैं कि परमेश्वर अपने कार्य चुपचाप करता है, जब मनुष्य

अपने प्रतिदिन के कार्यो पर चला जाता है, हमारे लिए यह एक स्थापित सत्य है!

अपने नाम से भी बढ़कर महत्व दिया है। उसने अपने वचन को अपने नाम से अधिक ऊँचा उठाया है। परमेश्वर के लिए उसका वचन जो उसने बोला है, उसकी मान-सम्मान से अधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि उसका नाम उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उसका वचन महत्वपूर्ण है। हमें इसे समझना आवश्यक है। उसका सम्मान उसके वचन पर आधारित है। दो महत्वपूर्ण बातें हैं। पहला परमेश्वर की ओर से, चूँकि उसने अपना वचन अपने नाम से अधिक ऊँचा उठाया है, वह उस वचन को जो वह है, थामे रहेगा। परमेश्वर का वचन सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी और सर्वज्ञानी गुणों के द्वारा थामा हुआ है। उसने कहा,"मैं अपने वचन को पूरा करने के लिए उत्सुक हूँ (यिर्मयाह 1:12)। दूसरा हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम न केवल उसके नाम में महत्व को जानें बल्कि उसके वचन को भी जानें। हमने उसके नाम को पुकारा और बचाए गए (रोमियों 10:13)। हमें अब लगातार उसके वचन को समझते जाना है क्योंकि स्वयं परमेश्वर ने अपने वचन को अपने नाम से अधिक सम्मान का स्थान दिया है।

परमेश्वर का वचन उसके चरित्र के समान सुदृढ़ है

"हमारी इच्छा है कि तुममें से अपनी आशा की पूर्ण निश्चयता को प्राप्त करने के लिए अन्त तक प्रयत्नशील रहे जिससे कि तुम आलसी न हो जाओ। परन्तु उनका अनुकरण करो जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के उत्तराधिकारी हैं। इब्राहीम से प्रतिज्ञा करते समय जब परमेश्वर ने शपथ के लिए अपने से बड़ा कोई न पाया तो उसने यह कहते हुए अपनी ही शपथ खाई निश्चय मैं तुझे आशीष दूँगा और निश्चय ही मैं तुझे बढ़ाऊँगा और इस प्रकार धीरज की प्रतीक्षा करके उसने प्रतिज्ञा प्राप्त की। क्योंकि मनुष्य तो अपने से किसी बड़े की शपथ खाते हैं। और उस बात की निश्चित करने वाली यह शपथ उनके हर एक विवाद को समाप्त कर देती है। इसी प्रकार जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसों पर अपने अटल उद्देश्य को और अधिक प्रकट करना चाहा तो उसने शपथ का

उपयोग किया कि हमें दो अटल बातों के द्वारा जिनमें परमेश्वर का झूठ बोलना असम्भव है, दृढ़ प्रोत्साहन मिले अर्थात् हमें जो शपथ पाने के लिए दौड़ पड़े हैं कि उस आशा को प्राप्त करें जो सामने रखी है" (इब्रानियों 6:11-18)।

जब परमेश्वर ने इब्राहीम से प्रतिज्ञा की तब उसने अपनी प्रतिज्ञा अपनी शपथ के द्वारा सुदृढ़ की उसने कहा, "मैं तुझे आशीष दूँगा और तुझे बढ़ाऊँगा"। परमेश्वर ने इब्राहीम को दो अपरिवर्तनीय वस्तुऐं दीं उसकी प्रतिज्ञा (वचन) और अपनी शपथ। जब जब परमेश्वर कहता है "मैं करूँगा....", वह हमें दो अपरिवर्तनीय वस्तुएं उसकी प्रतिज्ञा (उसका वचन) और उसकी शपथ (वाचा, वायदा) उस प्रतिज्ञा को दृढ़ करने के लिए देता है। परमेश्वर का प्रत्येक वचन (प्रतिज्ञा) एक "शपथ के साथ वाक्य है" जो उसने स्वयं खाई है। परमेश्वर की शपथ उसके आधार पर ही दृढ़ है। उसके साथ "अपरिवर्तनीय" कुछ नहीं है, उसके जैसा वह अपरिवर्तनीय है। क्योंकि वह ऐसा परमेश्वर है जिसका चरित्र अपरिवर्तनीय है। क्योंकि वह ऐसा परमेश्वर है जिसका चरित्र अपरिवर्तनीय है। उसने कहा, "मैं परमेश्वर हूँ मैं बदलता नही" (मलाकी 3:6)। अतः परमेश्वर का प्रत्येक वचन उसी अपरिवर्तनीय चरित्र के द्वारा दृढ़ किया गया है। परमेश्वर के चरित्र की एक विशेषता है "परमेश्वर के लिए असम्भव है कि वह झूठ बोले।"

वह ऐसा परमेश्वर है जो "झूठ नहीं बोल सकता" (तीतुस 1:2)। अतः प्रत्येक वचन जो वह बोलता है वह सत्य है। जैसे यीशु ने कहा, "तेरा वचन सत्य है" (यूहन्ना 17:17)। "परमेश्वर मनुष्य नहीं कि वह झूठ बोले, न वह मानव-पुत्र है कि पछताए। क्या वह कुछ कहे, और उसे न करे? या क्या वह कुछ बोले और उसे पूरा न करे?" (गिनती 23:19)।

हमें परमेश्वर के अपरिवर्तनीय चरित्र के क्षेत्र में आकर इस पर टिके रहना आवश्यक है। हम जानते हैं कि वह कभी झूठ नहीं बोल सकता। अतः प्रत्येक वचन जो उसने बोला है पूर्ण सत्य है। जब हम इस बात के प्रति आश्वस्त हैं, तभी, जैसे ऊपर का वचन बताता है, हमारे

पास "दृढ़ शान्ति" होगी अथवा जैसे अंग्रेजी की एम्पलीफाईड बाइबल का अनुवाद है "हमारे अन्दर शक्तिशाली सामर्थ और दृढ़ उत्साह होगा" (इब्रानियों 6:18)।

शुद्ध वचन

"यहोवा के वचन तो पवित्र वचन हैं, वे ऐसी चाँदी के समान हैं जो भट्ठी पर ताई जाकर सात बार शुद्ध की गई" (भजनसंहिता 12:6)।

हमारा परमेश्वर सत्य का परमेश्वर है। उसके वचन सत्य हैं और शुद्ध हैं। परमेश्वर के वचनों में त्रुटि नहीं है। परमेश्वर के वचन की सम्पूर्णता सत्य है (भजनसंहिता 119:160)। उसकी भली प्रतिज्ञाऐं कभी असफल नहीं होंगी (1 राजा 8:56ब)। उन पर निश्चयता के साथ भरोसा किया जा सकता है। उसकी प्रतिज्ञाओं पर बिना किसी सन्देह के विश्वास किया जा सकता है। उसके निर्देश सम्पूर्ण मन से स्वीकार किये जा सकते हैं। परमशेवर के वचन स्वर्ग में दृढ़ता के साथ स्थापित हैं (भजनसंहिता 119:89)। वे न तो बदले जा सकते हैं और न ही उनमें कुछ घटाया-बढ़ाया जा सकता है। क्योंकि वह अपनी वाचा को कभी नहीं तोड़ेगा और न ही उनका खण्डन करेगा, जो उसने बोला है (भजनसंहिता 89:34)। उसके वचन एक मजबूत सुरक्षा का स्थान है, क्योंकि इसके अतिरिक्त कुछ ऐसा नहीं है जो इनकी तरह शुद्ध, सुदृढ़ और सदा तक स्थिर रहनेवाला हो।

परमेश्वर का वचन उसकी सामर्थ को ले जाने वाला वाहन है

"विश्वास ही से हम जानते हैं कि परमेश्वर के वचन के द्वारा समस्त सृष्टि की रचना ऐसी की गई कि जो कुछ देखने में आता है, वह दिखाई देनेवाली वस्तुओं से नहीं बनाया गया था" (इब्रानियों 11:3)।

"वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्त्व का प्रतिरुप है, तथा अपने सामर्थ्य के वचन के द्वारा सब वस्तुओं को सम्भलता है। वह पापों को धोकर ऊँचे पर महामहिम की दाहिनी ओर बैठ गया" (इब्रानियों 1:3अ)।।

"क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, प्रबल और किसी भी दोधारी तलवार से तेज़ है। वह प्राण और आत्मा जोड़ों और गुर्दों दोनों को आर-पार बेधता और मन के विचारों तथा भावनाओं को परखता है" (इब्रानियों 4:12)।

हम विश्वासियों को यह मालूम है, और स्वीकार भी किया है कि परमशेवर मात्र अपने वचन को बोलने के द्वारा इस विश्व को अस्तित्व में लाया। यह विश्वास करना कहीं अधिक "तर्कसंगत" है, उसकी अपेक्षा जो यह विश्वास करते हैं कि समय के अन्तराल में वस्तुऐं अपने आप में बन गई, जैसा अन्य प्रस्ताक और सिद्धान्तक दावा करते हैं। हम जानते हैं कि "संसार परमेश्वर के वचन से सृजा गया"। यह विश्व परमेश्वर के उस वचन से जो उसने बोला बनाया, निर्मित आकृत और सजाया गया है। दृष्य वस्तुएं उन वस्तुओं से नहीं बनी जो दिखाई देती हैं। जिसका अर्थ है दृश्य वस्तुओं अदृश्य वस्तुओं से बनी है। स्वाभाविक संसार आत्मिक संसार से बना है। यह एक शाक्तिशाली सत्य है जिसे हमें अपने अन्दर रखना है। परमेश्वर का अदृश्य वचन, आत्मिक सामग्री ही दृश्य स्वाभाविक संसार को अस्तित्व में लाया है। न केवल सब वस्तुएं परमेश्वर के वचन के द्वारा सृजी गई, बल्कि इब्रानियों 1:3 के अनुसार, सब वस्तुऐं वचन के द्वारा थामी गई हैं। समस्त विश्व परमेश्वर के वचन के द्वारा जीवित है, चलाया जाता है और क्रम में रखा है।

हम तब यह बात समझ पाते हैं जब यह पहचान जाते हैं कि परमेश्वर का वचन सामर्थ पूर्ण है। भौतिक विज्ञान में प्रकाश के स्वभाव के सिद्धान्तों में से एक सिद्धान्त यह मानता है कि प्रकाश में "Photons" होते हैं। फोटोन्स ऊर्जा के पैकेट होते हैं। जब ये फोटोन्स किसी उचित वस्तु पर पड़ते हैं तब वे अपनी ऊर्जा निकालते हैं। ठीक इसी प्रकार से हम प्राय: अपने मस्तिष्क में यही तस्वीर बनाते हैं कि परमशेवर के वचन सामर्थपूर्ण पैकेट हैं जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सामर्थ को अपने अन्दर लेकर आते हैं। ये वचन परमेश्वर की "अलौकिक ऊर्जा" निकालते हैं और सृजनात्मक कार्य करवाते हैं।

इन पर ध्यान दीजिए...

- यदि परमेश्वर अपने वचन के द्वारा सम्पूर्ण विश्व को अस्तित्व में ला सकता है, तो क्या परमेश्वर हमारे जीवन में वे वस्तुऐं नहीं ला सकता है जो वर्तमान में हमारे जीवनों में नहीं है? जहाँ बीमारी है, परमेश्वर अपने वचन की सामर्थ से चंगाई और स्वास्थ्य ला सकता है। जहाँ निर्धनता है, परमेश्वर अपने वचन की सामर्थ से भौतिक सम्पन्नता को अस्तित्व में ला सकता है। उसके वचन में उसकी सृजनात्मक सामर्थ रहती है। अतः परमेश्वर का वचन वे वस्तुऐं बना सकता है (अस्तित्व में ला सकता है) न जिनकी प्रतिज्ञा उसने की है यद्यपि वे वर्तमान में हमारे जीवनों में पाई जाती हों।

- परमेश्वर ने अपना वचन इस विश्व को नमूना देने, निर्माण करने और आकार देने हेतु प्रयोग किया। क्या परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हमारा वर्तमान और भविष्य को नहीं नमूना दे सकता है, निर्माण कर सकता और इसे आकार दे सकता है? परमेश्वर के वचन में सामर्थ है कि वह हमारा वर्तमान बदल दे और हमारा भविष्य बनाए।

- यह सारा विश्व परमेश्वर के वचन के द्वारा जीवित, स्थापित और चलाया जाता है। क्या परमेश्वर का वचन हमारे छोटे-छोटे जीवनों को जीवित, स्थापित और चला नहीं सकता है? परमेश्वर के वचन में पर्याप्त और अधिक सामर्थ है कि वह हमारे जीवन को जीवित रख सके, चला सके और हमारे इस पृथ्वी पर के जीवन से सम्बन्धित वस्तुओं को क्रम से रख सके।

प्रतिज्ञाओं पर स्थिर रहना

"उसने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास कर किया इसलिए कि उस वचन के अनुसार जो कहा गया था तेरा वंश ऐसा होगा वह बहुत-सी जातियों का पिता हो" (रोमियों 4:18)।

परमेश्वर के वचन की शुद्ध और सामर्थ की समझ हमें दृढ़ निश्चय दिलाती है कि हम उस पर आश्रित रहें। परमेश्वर का वचन सत्य है।

अतः वचन में प्रतिज्ञा की गई वस्तु की हम आशा कर सकते हैं। परमेश्वर का वचन सामर्थी है। अतः हम निश्चय कर सकते हैं कि वह हमारे जीवनों में फलवन्त होगा। चाहे हमें इब्राहीम की तरह समस्त मानवीय तर्कों के विरुद्ध खड़ा होना पड़े जहाँ कोई आशा प्रतीत नहीं होती। जब परिस्थितियाँ आशाहीन हो जाती हैं, तब भी हम विश्वास में आशा कर सते हैं कि प्रभु ने जो कहा है हम वही बन जाएंगे। हम ऐसा इसलिए कर पाएंगे क्योंकि हमने परमेश्वर के वचन की शुद्धता और उसकी सामर्थ को समझ लिया है। हम जानते हैं कि उसका वचन असफल नहीं हो सकता।

हममें से कुछ लोग कठिन आर्थिक परिस्थितियों में से गुजर रहे होंगे। हम सोचते होंगे कि ये परिस्थितियाँ कभी बदलेंगी भी या नहीं। परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा की है कि हमारी सारी आवश्यकताऐं पूरी की जाएंगी। हम जानते हैं कि उसने प्रतिज्ञा की है कि उसकी महिमा के धन के अनुसार हमारी सब आवश्यकताऐं पूरी करेगा (फिलिप्पयों 4:19)। हम जानते हैं कि यदि हम पहले परमेश्वर के राज्य को खोजते हैं, तो इस पृथ्वी पर के जीवन में जो कुछ हमें चाहिए वह हमें दिया जाएगा (मत्ती 6:33)। हम जानते हैं कि यदि हम उन वस्तुओं के द्वारा जो हमारे पास है, परमेश्वर का आदर करेंगे तो वह हमें बढ़ाएगा (नीतिवचन 3:9,10, मलाकी 3:9-11)। यह जानते हुए कि इनमें से प्रत्येक प्रतिज्ञा शुद्ध अलौकिक सामर्थ से परिपूर्ण है, हम इन्हें विश्वास से पकड़े रहते हैं। हम जानते हैं कि इन वचनों (प्रतिज्ञाओं) में प्रर्याप्त सामर्थ है कि वे हमारे जीवनों में आर्थिक आशीष का चमत्कार कर सकते हैं और हमारी परिस्थितियों को बदल सकते हैं। हम लगातार उसकी प्रतिज्ञाओं को पकड़े रहते हैं।

अन्य कुछ लोग अपने भविष्य के लिए चिन्तित होंगे। यद्यपि वस्तुऐं अस्पष्ट अनश्चित बल्कि आशाहीन प्रतीत हो सकती है। परन्तु परमेश्वर का वचन हमारे जीवनों में निश्चयता और दृढ़ता लाता है। वचन कहता है कि सब बातें मिलकर भलाई को उत्पन्न करती हैं उन सबके लिए जो उससे प्रेम करते हैं और उसके उद्देश्यों के लिए बुलाए गए हैं

(रोमियों 8:28)। परमेश्वर उन योजनाओं को जानता है जो हमारे लिए उसके पास हैं। महान सम्पन्नता की योजनाऐं, ऐसा भविष्य बनाने की योजनाऐं जिसकी हम आशा कर रहे हैं (यिर्मयाह 29:11)। हमारे पथ चमकते हुए प्रकाश की तरह है जो अधिकारिक बढ़ता जाता है (नीतिवचन 4:18)। अतः हम वस्तुओं को और स्पष्ट होने की आशा रखते हैं। हम जानते हैं कि हमारे कदम प्रभु के द्वारा निर्देशित होते हैं (भजनसंहिता 37:23,24))। ये सब और अन्य इस प्रकार के बाइबल के वचन हमें निर्भीकता, साहस और निश्चयता से भरते हैं। हम उसकी प्रतिज्ञाओं पर लगातार बने रहते हैं।

ठीक इसी प्रकार से, हमारे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और आज्ञाओं को पहचान सकते हैं। हम यह मानते हैं कि उसका सम्पूर्ण वचन हमारे जीवन के सभी क्षेत्रों हेतु शुद्ध और सामर्थपूर्ण है।

- वचन की असीमित सामर्थ्य और इसकी हमारे जीवन में कार्य करने की सम्भावना को समझने के बाद हमें अपने जीवन में परमेश्वर के वचन की सामर्थ्य का अनुभव करने के लिए क्या करना चाहिए?
- वह क्या है जो परमेश्वर के वचन को सामर्थ्य एक विश्वासी के जीवन में प्रकट करती है?

हम अगले अध्यायों में इस पर विचार करेंगे।

3

परमेश्वर का वचनः एक चमत्कारी बीज

बीज बोने वाले का दृष्टान्त

"वह फिर झील के किनारे उपदेश देने लगा और उसके पास इतना विशाल जनसमूह एकत्रित हो गया कि वह झील में एक नाव पर चढ़कर बैठ गया और सारा जन समूह झील के किनारे भूमि पर खड़ा रहा। वह दृष्टान्तों में उन्हें बहुत सी बातें सिखाने लगा और वह अपने उपदेश में उनसे कह रहा था, सुनो! देखो, एक बीज बोनेवाला बीज बोने निकला। जब वह बो रहा था तो कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरे और चिड़िया ने आकर उन्हें चुग लिया और कुछ बीज पथरीली भूमि पर गिरे जहाँ उन्हें अधिक मिट्टी न मिली और गहरी मिट्टी न मिलने के कारण वे शीघ्र उग आए। और जब सूर्य उदय हुआ तो झुलस गए और जड़ न पकड़ने के कारण सूख गए। कुछ बीज कटीली झाड़ियों में गिरे और झाड़ियों ने बढ़कर उन्हें दबा दिया। और उनमें फसल न लगी। परन्तु कुछ बीज अच्छी भूमि पर गिरे। जब वे उगकर बढ़े तो फलवन्त होकर कोई तीस गुना, कोई साठ गुणा और कोई सौ गुणा फल लाए। और वह कहा रहा था, जिसके पास सुनने के लिए कान हों वह सुन ले। जैसे ही वह अकेल रह गया उसके अनुयायी तथा बारह चेले उससे दृष्टान्तों के सम्बन्ध में पूछने लगे। उसने उनसे कहा, "तुम पर तो परमेश्वर के राज्य का भेद प्रकट किया गया है परन्तु बाहर वालों के लिए प्रत्येक बात दृष्टान्तों में कही जाती है। जिससे कि वे देखते हुए तो देखें पर उन्हें सूझ न पड़े, और सुनते हुए सुनें और समझ न सकें, कहीं ऐसा न हो कि वे फिरें और क्षमा प्राप्त करें। फिर उसने उनसे कहा, "क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते तो फिर सब दृष्टान्तों को कैसे समझोगे? बोनेवाला वचन बोता है और ये वे हैं जो मार्ग के किनारे के हैं। जहाँ वचन बोया जाता है। उसी प्रकार ये लोग बीज बोई गई पथरीली भूमि के समान हैं। जब वे वचन को सुनते हैं, तो तुरन्त उसे आनन्दपूर्वक ग्रहण कर लेते हैं। वे अपने आप में गहरी जड़ नहीं रखते और थोड़े ही समय के लिए रहते हैं। परन्तु जब वचन के कारण उन पर कष्ट या सताव आता है तो वे तुरन्त ठोकर खाते हैं और कुछ वे हैं जो कंटीली झाड़ियां में बीज बोई गई भूमि

के समान है, जो वचन को सुनते तो हैं, पर संसार की चिन्ताऐं और धन का धोखा और अन्य वस्तुओं का लोभ उनमें समाकर वचन को दबा देता है। और वह निष्फल हो जाता है। और ये वे हैं जो बोई गई अच्छी भूमि के समान हैं और वे वचन को सुनते और उसे ग्रहण करते हैं और तीस गुणा, साठ गुणा और सौ गुणा फल लाते हैं" (मरकुस 4:1-10,13-20)।

यह दृष्टान्त समझने के लिए अपने आप में साधारण और सरल है, विशेषकर उन लोगों के लिए जो इससे परिचित हैं, या तो पढ़ने के द्वारा अथवा अनुभव के द्वारा पौधों/फसल के बीज बोने, उसकी देखभाल करने के द्वारा यह साधारण दृष्टान्त जो प्रभु ने प्रयोग किया, गहरा और सामर्थी सत्य, परमेश्वर के वचन को एक मनुष्य के जीवन में कार्य करने के विषय में प्रकट करता है। हम जानते हैं कि परमेश्वर का वचन जीवित और चुस्त है (इब्रानियों 4:12)। यह दृष्टान्त हमें बताता है कि वचन कैसे कार्यरत होता है, और यह भी कि किस प्रकार किन बातों के द्वारा इसमें रुकावटें डालकर इसे कार्यविहीन बनाता है।

आइए इस दृष्टान्त में प्रकट किए गए विचारों को देखें। यह संक्षिप्त अध्ययन करते समय हम इसके समानान्तर भागों मत्ती 13:18-23 और लूका 8:11-15 से भी कुछ विचार प्रकट करेंगे। लेकिन हम आपको उत्साहित करेंगे कि आप इनमें से प्रत्येक पर आगे अध्ययन करें।

- परमेश्वर का वचन बीज के समान है (मरकुस 4:14)।
- हमारे हृदय भूमि के समान है जहाँ परमेश्वर के वचन का बीज बोया जाना है (मरकुस 4:15)।
- यदि इसे फल लाना है तो बीज की सुरक्षा और देखभाल करना आवश्यक है।
- हमें वचन को समझना है (आत्मिक सत्य को समझना है) ताकि शैतान को वचन चुराने से रोका जा सके (मत्ती 13:19)।
- चाहे कितनी भी मुसीबत अथवा सताव संसार अथवा शैतान की ओर से क्यों न आएं, हमें वचन को दृढ़ता से पकड़े रहना है और

अनुमति देना है कि यह हमारे हृदयों में जड़ पकड़े ताकि यह फल ला सकें।

- हमें इस संसार की चिन्ताओं से अपने हृदयों को चौकस रखना है, धोखेबाजी, धन और अन्य वस्तुओं की चाह से चौकस रखना है। जब हम ऐसा करते हैं तब हम वचन को फलवन्त होने के लिए उचित "वातावरण" बनाते हैं (मरकुस 4:19)।
- जब वचन को अपने हृदय में समझते हैं (मत्ती 13:23), स्वीकार करते हैं (मरकुस 4:20), और अपने साथ रखते हैं (लूका 8:15), तब हम अपने जीवनों में फल लाते हैं।

बीज परमेश्वर का वचन है

" दृष्टान्त यह है: बीज परमेश्वर का वचन है" (लूका 8:11)।

"क्योंकि तुमने नाशमान नहीं वरन् अविनाशी बीज से अर्थात् परमेश्वर के जीवित तथा अटल वचन द्वारा नया जन्म प्राप्त किया है" (1 पतरस 1:23)।

सबसे पहली और सबसे महत्वपूर्ण बात जो हम इस दृष्टांत से सीखते हैं वह है कि परमेश्वर का वचन एक बीज के समान है। जब एक बीज यह किसी भी प्रकार का बीज हो सकता है–यह अकेला और जीवन रहित प्रतीत होता है। हम ऐसा कभी नहीं सोचते कि यही छोटा बीज भूमि में बोया जाता है तो जड़ पकड़ कर उगेगा और एक दिन एक पौधा और विशाल वृक्ष बनेगा। इसी छोटे बीज में वह क्षमता है कि एक बड़ा वृक्ष बने। एक प्रकार से हम बीज में "सृजनात्मक" योग्यता है क्योंकि वह एक ऐसी वस्तु को बढ़ाता है जिसका इससे पहले कभी अस्तित्व न था। जब तक यह बीज अकेला रहता रहता है एक थैले में अथवा भण्डार में यह अपनी क्षमता प्रकट नहीं कर पाता है। बीज के अन्दर विद्यमान क्षमता तभी प्रकट होती है जब इसे बोया जाता है और इसकी देखभाल ठीक रीति से की जाती है।

इसी प्रकार परमेश्वर का वचन है। प्रत्येक वचन जो परमेश्वर हमसे बोला है वह बीज है। परमेश्वर का वचन जो हमें दिया गया है उसमें सृजनात्मक सामर्थ है। हमें यह बात अपने मस्तिष्कों और हृदयों में रखना हैं। जब परमेश्वर के वचन रूपी बीज हमारे हृदयों में बोए जाते हैं और उनकी देखभाल उचित रूप से की जाती है, तब उनमें स्थित अलौकिक सामर्थ हमारे जीवनों में प्रकट होती है।

बीज की दुनियाँ से हटकर हम मानव और पशुओं की दुनियाँ में जाकर तुलना करें। 1 पतरस 1:23 में परमेश्वर के वचन को एक अविनाशी बीज के रुप में बताया गया है। यूनानी भाषा का शब्द जो बीज के लिए प्रयुक्त हुआ है वह "Sperm" है जो अंग्रेजी शब्द के Sperm (बीज) के समान प्रयुक्त हुआ है। परमेश्वर का वचन अलौकिक (वीर्य) बीज है। चाहे बीज शब्द कृषि अथवा जीव विज्ञान के यूनानी शब्द Sporos रुप में प्रयोग किया गया हो अथवा "Sperma" (बीज) हेतु प्रयोग किया गया हो परन्तु जो आधारभूत सिद्धान्त है वह एक ही है। परमेश्वर के वचन में पैदा करने की क्षमता है। इसके अन्दर जीवनदायक, सृजनात्मक और चमत्कार करने की समार्थ है। प्रत्येक वचन जो परमेश्वर ने बोला है एक चमत्कारी बीज है जिसमें सृष्टि करने की योग्यता है।

जैसा 1 पतरस 1:23 में लिखा है हम परमेश्वर के वचन के द्वारा नए सिरे से जन्में हैं, जो शुद्ध और पवित्र बीज है। जब परमेश्वर के वचन का बीज हमारे हृदयों में संचित किया जाता है और इस पर विश्वास किया जाता है तब यह जीवनदायक सामर्थ पैदा करता है। तभी तुरन्त एक क्षण में हमारा नया जन्म होता है। हम नई सृष्टि बन गए जैसा कि 2 कुरिन्थियों 5:17 में कहा गया है। परमेश्वर का सृजनात्मक कार्य जो हमारे जीवनों में हुआ है (और बहुतों के हृदयों मे हो रहा है जो बचाए जा रहे हैं) यही सबसे महान चमत्कार है जो हम अनुभव करते हैं मसीह में नई सृष्टि बनने की। यही नये जन्म का चमत्कार है। यह सृजनात्मक चमत्कार पवित्र बीज की सामर्थ के द्वारा हुआ है, जो परमेश्वर का वचन है।

थोड़ा विचार कीजिए यह कितना सामर्थी कार्य है कि हम मसीह में नई सृष्टि बनाए गए। शैतान की सारी सामर्थ जो हमें बाँधे हुए थी, हमारे जीवनों से हटा दी गई है। हमें शैतान की सामर्थ से निकाल कर परमेश्वर के अपने पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया गया है (कुलुस्सियों 1:13)। हमें परमेश्वर के परिवार में स्वीकार किया गया है। हम परमेश्वर से उत्पन्न हुए और अलौकिक स्वभाव के भागीदार ठहरे हम मसीह में लाए गये और मसीह में आने की सारी अद्भुत आशीषें हमारी हो गई। यह और इससे भी अधिक बहुत कुछ हमारा हो गया, मात्र एक क्षण में, जब परमेश्वर के वचन के बीज ने अपनी चमत्कारी सामर्थ हमारे जीवन में डाली।

क्या परमेश्वर के वचन रुपी बीज ने अपनी सामर्थ अथवा हमारे अन्दर कार्य करने की योग्यता खो दी है? क्या यह चमत्कार का बीज जो परमेश्वर का वचन है वह हमारे जीवनों में क्या अब कोई चमत्कार नहीं कर सकता? नहीं बिल्कुल नहीं क्योंकि यह वचन पवित्र बीज है। यह वचन जीवित है, सदैव बना रहता है, सदैव जीवित है। प्रत्येक वचन जो परमेश्वर ने हमसे बोला है उसमें उत्पन्न करने की योग्यता है।

परमेश्वर का वचन उत्पन्न करने हेतु रचा गया है

"उसी प्रकार मेरे मुँह से निकलने वाला वचन होगा वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा वरन मेरी इच्छा पूरी करेगा और जिस काम के लिए मैंने उसको भेजा है उसे पूरा करके ही लौटेगा जिस प्रकार आकाश से वर्षा और हिम गिरते हैं और पृथ्वी को सींचे बिना वापस नहीं जाते और भूमि को उपजाऊ और फलदाई बनाते हैं जिससे बोनेवाले को बीज और खाने वाले को रोटी मिलती है" (यशायाह 55:10-11)।

"इस कारण हम भी सर्वदा परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं कि जब हमारे द्वारा उन्हें परमेश्वर के वचन का सन्देश मिला तो तुमने उसे मनुष्यों का नहीं परन्तु परमेश्वर का वचन समझ कर ग्रहण किया। सचमुच वह है भी जो तुम विश्वासियों में अपना कार्य भी करता है" (1 थिस्सलुनीकियों 2:13)।

परमेश्वर ने कहा जो वचन उसके मुख से निकलता है वह खाली वापस न लौटेगा बल्कि यह उस उद्देश्य को भी पूरा करेगा जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है। यशायाह के दो पदों में से हम चार साधारण अनुमान लगा सकते हैं:

- परमेश्वर का वचन उत्पन्न करने हेतु रचा गया है (अथवा पूरा करने के लिए रचा गया है)।
- परमेश्वर का वचन उसको पूरा करेगा जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है और उसका उद्देश्य पूरा करेगा।
- जब परमेश्वर अपना उद्देश्य पूरा करना चाहता है तब वह अपना वचन बोलता है।
- परमेश्वर का वचन उसके उद्देश्यों और उसका आनन्द प्रकट होता है।

वह वचन जो परमेश्वर बोलता है (और वह वचन जो उसने बोले हैं) खाली वचन नहीं है। वह सर्वशाक्तिमान परमेश्वर के गुण से परिपूर्ण है। वह उत्पन्न करने हेतु रचे गए है। बीज की तरह प्रत्येक वचन जो परमेश्वर ने बोला है वह अलौकिक योग्यता से परिपूर्ण है ताकि अपने कार्यों को पूरा कर सके।

परमेश्वर ने अपना वचन इसलिए ठहराया है कि वह उसके उद्देश्यों को इस पृथ्वी पर पूरा करे। क्योंकि परमेश्वर का उद्देश्य है कि वह अपने लोगों को आशीष दे (भजनसंहिता 3:8), उसका वचन इस उद्देश्य को पूरा करेगा। परमेश्वर का उद्देश्य है कि लोगों को चंगाई दे (निर्गमन 15:26,23:25), अतः उसका वचन बीमारों को चंगा करेगा (भजनसंहिता 107:20)। परमेश्वर ने ठहराया है कि उसके लोग बुद्धि, समझ और जीवन में मार्गदर्शन प्राप्त करें (यशायाह 48:17, भजनसंहिता 32:8), इसलिए परमेश्वर का वचन इस उद्देश्य को पूरा करेगा। उसका वचन उन प्रत्येक कार्यों को पूरा करेगा जो उसने ठहराया है, योजना बनाई है, इरादा किया है, और उसकी इच्छा है। प्रभु परमेश्वर स्वर्ग में है। जब कभी वह

इस पृथ्वी पर अपने उद्देश्य और अपनी इच्छाएं पूरी करना चाहता है, वह अपने मुँह से एक वचन बोलता है। यह बोला गया वचन एक स्वर्गीय बीज के समान है। यह परमेश्वर के इरादे को पूरा करेगा। हम उसके लोग इस पृथ्वी पर हैं। अपने पवित्र वचन की सामर्थ के द्वारा (और पवित्र आत्मा के कार्य के द्वारा) परमेश्वर अपने उद्देश्यों और इच्छाओं को हमारे जीवनों में पूरा करेगा।

परमेश्वर ने अपने वचन को ऐसा ठहराया है कि वह उसकी सामर्थ हमारे जीवनों में लाये जैसे प्रेरित पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को लिखा, परमेश्वर का वचन अपने अलौकिक सामर्थ निकालता है और जो जो उस पर विश्वास करते हैं उनके जीवनों में प्रभावशाली रुप में कार्य करता है। परमेश्वर का प्रत्येक वचन जो पवित्रशास्त्र में है अलौकिक बीज है जो अपने अन्दर योग्यता रखता है कि परमेश्वर की वस्तुओं को एक विश्वासी के जीवन में उत्पन्न करे। चूँकि प्रत्येक बीज अपनी किस्म के अनुसार फल लाता है (उत्पत्ति 1:11,12), परमेश्वर का वचन वह सब उत्पन्न करता है जिसके लिए वह ठहराया गया है। चंगाई के विषय में परमेश्वर का वचन चंगाई लाएगा। आशीष और सम्पन्नता के विषय में परमेश्वर का वचन आशीष और सम्पन्नता लाएगा। जीवन के हर क्षेत्र के बारे में परमेश्वर का वचन उस क्षेत्र में आवश्यक वस्तुऐं उत्पन्न करेगा।

[कृपया ध्यान दीजिए: वचन के बीज के बारे में ये सत्य बताते हुए हम आपको याद दिला दें कि वचन को सुनने और पूर्णत: इसके आज्ञाकारी होने के भी सिद्धान्त हैं न कि कुछ चुने हुए वचन के भाग ही। जीवन, स्वास्थ्य, आशीषें और पूर्ण सम्पन्नता की उनके लिए प्रतिज्ञा है जो परमेश्वर की सम्पूर्ण व्यवस्था (आज्ञा) को सुनते हैं और पालन करते हैं नीतिवचन 3:1,2,7,8,4:20-22 आदि)]।

बीज अंकुरित होने की प्रक्रिया

"उसने कहा, "परमेश्वर का राज्य ऐसा है जैसे कोई मनुष्य भूमि पर बीज डाले और रात को सो जाए और दिन जाग जाए और वह बीज अंकुरित होकर बढ़े। वह व्यक्ति स्वयं नहीं जानता कि यह कैसे होता है भूमि अपने आप फसल

उपजाती है। पहले अंकुर तब बालें और तब बालों में तैयार दाने परन्तु जब फसल पक जाती है तो वह तुरन्त हंसिया लगाता है, क्योंकि कटनी आ पहुँचती है" (मरकुस 4:26-29)।

इस दृष्टान्त में प्रभु यीशु ने हमें एक सामान्य सिद्धान्त बताया है जो परमेश्वर के सम्पूर्ण राज्य में कार्य करता है। यह बीज का सिद्धान्त हमारे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में परमेश्वर के राज्य में लागू होता है। चूँकि हम अभी परमेश्वर के वचन के बारे में अध्ययन कर रहे हैं, हम विचार करेंगे कि बीज का सिद्धान्त परमेश्वर के राज्य में इस विषय में कैसे लागू होता है। हम मुख्य धारणा को निम्नलिखित चित्रण के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं:

- बीज को बोया जाना आवश्यक है।
- इसके अंकुरित होने और बढ़ने में समय लगता है उससे पहले कि कोई चिन्ह प्रकट हो।
- बीज उत्पन्न करेगा यद्यपि हम नहीं जानते कि कैसे उत्पन्न करेगा।
- जब फसल आती है तो हमें हसुँआ लगाकर काटना है और इसे एकत्रित करना है (दूसरे शब्दों में हमें फसल को इकट्ठा करने के लिए अपना भाग पूरा करना है)।

जब मैंने पहले पहल इन सत्यों को समझना आरम्भ किया जिनका हम अध्ययन कर रहे हैं, तब परमेश्वर का वचन जो एक चमत्कारी बीज है, मैंने वचन के बीजों को अपने हृदय में विश्वासयोग्यता से बोना आरम्भ किया। अपनी सुविधानुसार मैंने एक अनुशासन बनाया, जिससे मुझे सहायता मिली कि मैं जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित बीज बो सकूँ जैसे विश्वास अलौकिक स्वास्थ्य, परिवार, बुद्धि और समझ, सफलता और सम्पन्नता, सेवा और चमत्कार, प्रार्थना एवं आर्थिक दान देना आदि। अब परमेश्वर के ये बीज जो मेरे जीवन में बोए गए (और बोए जा रहे हैं) एक ही रात में "बड़ी फसल" नहीं लाया। एक समय के बाद मुझे उन बीजों को जो मेरे हृदय में बोए गए थे उनका प्रभाव

और परिणाम देखना आरम्भ किया। बल्कि अभी तक मैंने "तीस गुणा" ही फसल का अनुभव किया है। जैसे–जैसे मैं वचन के बीज अपने हृदय में बोता जाऊँगा, मैं जानता हूँ कि मैं और अधिक सम्पन्न और भरपूरी का आनन्द उठाऊँगा जो वचन मेरे जीवन में उत्पन्न करता है।

अब शायद हम पूर्ण रुप से बखान नहीं कर सकते कि वचन के बीज हमारे हृदयों में बोने के द्वारा कैसे हमारे जीवनों में फलवन्त होते हैं। उदाहरण के लिए हम पूर्णरूप से नहीं बता सकते कि यदि एक व्यक्ति सफलता और सम्पन्नता के बीज बोता है तो यह बीज कैसे उनके जीवन में सफलता और सम्पन्नता लाएगा। इसी प्रकार से यदि कोई परमेश्वर के वचन के बीज चंगाई और स्वास्थ्य के लिए बोता है, किसी भी प्रकार की बीमारी और रोग से चंगाई प्रदान करने की सामर्थ कैसे अनुभव करेंगे और कैसे उन्हें स्वस्थ रखेंगे। हम केवल इतना कह सकते हैं कि वचन एक बीज के समान है और यह बीज अवश्य ही फल लाएगा यद्यपि हम नहीं जानते कि यह कैसे होगा। जब वचन अच्छी भूमि पर बोया जाता है और इसकी देखभाल उचित रूप से की जाती है तब जिस फल के लिए यह ठहराया गया है वह फल लाएगा।

आप परमेश्वर की वाटिका हैं

यह सन्देश प्रस्तुत करने का हमारा मात्र यह उद्देश्य नहीं है कि हम आपको परमेश्वर के वचन से रुचिकर सिद्धान्त के बारे में सूचित करें अथवा शिक्षा दें। हमारी इच्छा है कि आप पूर्ण रुप से इसका मूल्य और महत्व समझें कि ये सत्य आपके जीवन में कैसे लागू होते हैं। परमेश्वर ने अपने राज्य के सिद्धान्त अपने वचन में प्रकट में किये हैं। उनमें से एक पर हमने इस अध्ययन में अवलोकन किया है। अब हमारी जिम्मेदारी है कि इन सिद्धान्तों को हम अपने जीवन में लगातार लागू करें।

आप परमेश्वर की वाटिका हैं। परमेश्वर ने आपको अपने बीज दिए हैं जिन्हें वह चाहता है कि आप अपने हृदय और जीवन में बोएं। कई प्रकार के बीज हैं, जैसे आशीष, सम्पन्नता, शान्ति, प्रेम, पवित्रता, शुद्धता, सामर्थ और इस प्रकार के अन्य बीज, जो यह बातें आपके जीवन में

उत्पन्न कर सकते हैं। क्या आप अपने हृदय में वचन के बीज बोने का एक अनुशासन बनाएंगे? क्या आप परमेश्वर को अनुमति देंगे कि वह अपने वचन के द्वारा आपके जीवन में अपने उद्देश्य और इच्छा पूरी करे?

हम कैसे वचन के बीज अपने हृदय में बोते हैं? हम कैसे बीज की देखभाल करते हैं? हम कैसे फसल को इकत्रित करते हैं? हम परमेश्वर के वचन पर मनन की प्रक्रिया के द्वारा ऐसा करते हैं जिनकी चर्चा हम अगले अध्यायों में करेंगे।

4

परमेश्वर के वचन पर मनन करना

पिछले अध्यायों में हमने इस बात पर जोर दिया है कि परमेश्वर का वचन हमारे विश्वास का स्रोत और नींव है। हमने परमेश्वर के वचन की शुद्धता और उसकी सामर्थ का अवलोकन किया। हमने यह सत्य प्रकट किया कि परमेश्वर का वचन उसकी सामर्थ से परिपूर्ण है और यह कि यह सामर्थ हमारे जीवनों में कैसे प्रकट हो सकती है। पिछले अध्याय में हमने विचार किया कि परमेश्वर का वचन एक बीज है, जो जब हमारे हृदय में बोया जाता है और उसकी देखभाल की जाती है, तब वह अपनी परिवर्तित करने की सामर्थ हमारे जीवनों में उंडेलता है। अब हम एक कदम आगे बढ़ाते हुए परमेश्वर के वचन पर मनन करने के अनुशासन को खोलेंगे। मनन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम परमेश्वर के वचन के बीज को अपने हृदयों में बोते और उसकी देखभाल करते हैं।

सामान्यत: जब मनन शब्द की चर्चा करते हैं लोग यह समझते हैं कि यह कोई रहस्यमय गुरुओं और योगियों का अभ्यास है जो पूर्ण दिशा से आए है। शायद इसी कारण से कलीसिया मनन के अभ्यास पर बल नहीं देती है। यह सत्य है कि संसार की बहुत संस्कृतियों की अपनी भिन्नता है। मनन की क्रिया की हमारा लक्ष्य है कि हम आपके समक्ष पवित्रशास्त्र के अनुसार मनन करने की समक्ष प्रस्तुत करें। हमारी यह भी इच्छा है कि आप इसका महत्व सीख जाएं और आपको यह अनुशासन अपने विश्वास की चाल में बनाने में प्रोत्साहन मिलें।

मनन- धर्मशास्त्र के अनुसार एक अनुशासन

"संध्या के समय इसहाक मैदान में ध्यान करने आया" (उत्पत्ति 24:63)।

" व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे मुँह से कभी दूर न हो, परन्तु इस पर दिन रात ध्यान करते रहना जिससे तू उसमें लिखी हुई बातों के अनुसार आचरण करने के

लिए सावधान रह सके। तब तू अपने मार्ग को सफल बना सकेगा और सफलता प्राप्त करेगा" (यहोशू 1:8)।

सबसे पहले "मनन" शब्द की चर्चा इब्राहीम के प्रतिज्ञा किए हुए पुत्र इसहाक के सम्बन्ध में उत्पत्ति की पुस्तक में हुई है। यद्यपि यह बहुत स्पष्ट नहीं है कि वह क्या और कैसे मनन कर रहा था, परन्तु यह रुचिकर है कि "मनन" का अभ्यास पवित्रशास्त्र में प्राचीन समयों में किया गया था इसहाक भी खेतों में गया कि वहाँ मनन कर सके जो हमें बताता है कि सामान्यरुप से एक व्यक्ति अपने आप को सब से अलग करके सारी बाधाओं और हस्तक्षेप से अलग हो जाता है ताकि मनन के लिए उचित वातावरण बना सके।

एक सर्वविदित पद जो मनन के सम्बन्ध में है वह यहोशू की पुस्तक के पहले अध्याय में है। परमेश्वर ने इस्राएलियों को जो उसके लोग हैं अपने दास मूसा के द्वारा "व्यवस्था" दी। मूसा ने इस्राएलियों को बताया कि वे कितने सौभाग्यशाली हैं कि परमेश्वर की व्यवस्था उनको दी गई। उदाहरण के लिए इन वचनों पर ध्यान दीजिए जो मूसा ने इस्राएलियों से कहे:

"देखो मैंने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार तुम्हें विधियाँ और नियम सिखाए हैं कि तुम उनका उस देश में पालन कर सको जिसको तुम अपने अधिकार में करने के लिए उसमें प्रवेश करनेवाले हो। अतः तुम उनको मानो और उनका पालन करो, इससे तुम्हारी बुद्धिमानी तथा समझदारी जाति-जाति के सब लोगों के सामने प्रकट होगी और वे इन विधियों को सुनकर कहेंगे निःसन्देह इस महान् जाति के लोग बुद्धिमान और समझदार हैं क्योंकि और कौन ऐसी महान जाति है जिसका ईश्वर उसके पुकारे जाने पर इतना समीप रहता है जितना हमारा परमेश्वर यहोवा, अथवा कौन ऐसी महान् जाति है जिसकी विधियाँ और आज्ञाएं ऐसी धर्ममय है जैसी यह सम्पूर्ण व्यवस्था जिसे मैं आप तुम्हारे सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ?" (व्यवस्थाविवरण 4:5-8)।

इसके अतिरिक्त, परमेश्वर अपने लोगों को याद दिलाता रहा कि वह चाहता है कि वे उसके वचन को अपने हृदयों में रखें और लगातार उनका आदर करें। समय-समय पर हम ऐसे कथनों को पढ़ते हैं जैसे "आज मैं जिन वचनों की आज्ञा तुझे दे रहा हूँ वे तेरे मन में बनी रहे।" और इसलिए तुम मेरे इन वचनों को अपने हृदय और अपने प्राण में धारण करना (व्यवस्थाविवरण 6:6, 11:18)। यही निर्देश पुनः यहोशू को दिया जा रहा है जो अब इस्राएलियों का अगुवा है। परमेश्वर यहोशू को आज्ञा दे रहा है और उससे कह रहा है कि तू दृढ़ हो और साहस बान्ध और ध्यानपूर्वक उस व्यवस्था का पालन कर जो मूसा के द्वारा दी गई है (यहोशू 1:7)। तब प्रभु यहोशू के समक्ष एक तरीका अथवा अनुशासन प्रस्तुत कर रहा है जिसे वह प्रयोग करके उसके वचन को अपने हृदय में रख सकता है और उसका पालन कर सकता है। परमेश्वर ने यहोशू से कहा, "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे मुँह से कभी दूर न हो परन्तु इस पर दिन रात ध्यान करते रहना जिससे तू उसमें लिखी हुई बातों के अनुसार आचरण करने के लिए सावधान रह सके। तब तू अपने मार्ग को सफल बना सकेगा और सफलता प्राप्त करेगा (यहोशू 1:8अ)।

यह जानना रुचिकर है कि परमेश्वर ही है जो स्वयं यहोशू को निर्देश दे रहा है कि वह उसके वचन पर दिन और रात मनन करे। अतः परमेश्वर के वचन पर मनन करना एक अनुशासन है जिसे परमेश्वर चाहता है कि हम इसका अभ्यास करें।

इस प्रक्रिया पर ध्यान दीजिए:

व्यवस्था की पुस्तक के वचन उसकी बातचीत के भाग होने चाहिए ("व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे मुख से अलग न होने पाए") और उसको लगातार वचन पर मनन करना चाहिए ("तू इसमें दिन और रात ध्यान दिए रहना")।

मनन करना एक अनुशासन है जो हमें पवित्रशास्त्र में दिया गया है जिससे हमें परमेश्वर के वचन को अपने हृदय (आत्मा) और प्राण

(मस्तिष्क) में रखने में सहायता मिलती है। मनन से सम्बन्धित अनेक पद हैं, विशेषकर भजनसंहिता की पुस्तक में। पहला भजन पवित्रशास्त्र का जाना पहचाना पाठ है जो हमें धर्मी जन के अनुशासन के बारे में सिखाता है। यह भजन हमें सिखाता है कि ऐसा मनुष्य दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता है। न ठट्ठा करने वालों की मण्डली में बैठता है। "परन्तु वह यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता और उसकी व्यवस्था पर दिन रात ध्यान किए रहता है" (भजनसंहिता 1:2)। उसकी धार्मिकता और वचन में लगातार ध्यान का अनुशासन उसे फलवन्त, उन्नत और उन सब कार्यों में सम्पन्न बनाता है जो वह करता है (भजनसंहिता 1:3)।

पवित्रशास्त्र का मनन परमेश्वर के वचन पर ही मनन करने तक सीमित नहीं है। हम अन्य "विषय" और विषय वस्तु भी पाते हैं जिन पर हम मनन कर सकते हैं। उदाहरण के लिए हम स्वयं प्रभु पर ध्यान कर सकते हैं। प्रभु, उसके चरित्र, उसके गुण, आदि हमारे मनन के विषय हो सकते हैं। दाऊद, इस्राएल के मधुर भजनकार ने कहा, "जब मैं अपने बिछौने पर पड़ा तुझे स्मरण करता हूँ तो रात के हर पहर तुझ पर ध्यान करता हूँ (भजनसंहिता 63:6)। एक दूसरे भजनकार ने लिखा: मेरा ध्यान करना उसे प्रिय लगे। मैं तो यहोवा में ही मगन रहूँगा (भजनसंहिता 104:340।

हम उन अद्‌भुत कामों के ऊपर मनन कर सकते हैं जो प्रभु ने हमारे जीवनों में किए हैं। दाऊद ने कहा: "मैं प्राचीनकाल से दिन स्मरण करता हूँ। मैं तेरे सब कामों पर मनन करता हूँ" (भजनसंहिता 143:5)। आसाप, एक और इस्राएल के भजनकार ने लिखा: "जो कुछ दान किया है मैं उस पर ध्यान करुँगा और तेरे कार्यों पर मनन करुँगा" (भजनसंहिता 77:12)। हम बुद्धि एवं समझ की बातों पर भी मनन कर सकते हैं। भजनकार ने लिखा है: "देश देश के सब लोगों, यह सुनो, हे संसार के सब निवासियो कान लगाओ क्या ऊँच, क्या नीच, क्या धनी, क्या दरिद्र! मेरे मुँह से बुद्धि की बातें निकलेंगी और मेरे हृदय का चिन्तन समझ ही होगा (भजनसंहिता 49:1-3)।

मनन-बाइबल का तरीका

यह समझने के बाद कि मनन करना वचन के अनुसार एक अभ्यास है और वास्तव में स्वयं परमेश्वर के द्वारा प्रोत्साहित है। वही एक तरीका है जिसके द्वारा हम परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में रख सकते हैं, हमारा लक्ष्य है कि यह सीखें कि कैसे मनन करें।

पुराने नियम में 2 मुख्य शब्द इब्रानी भाषा के हैं जो 'मनन' शब्द के लिए प्रयोग किए गए हैं। इब्रानी शब्द hagah (उच्चारण 'haw-gaw' हाउ-गाउ, (Strong's # 1897) का अर्थ होता है "चिन्तन करना, कल्पना करना, अपने मन में रखना, कराहना, गरजना, धीरे से कहना, कुड़कुड़ाना, चुपचाप आवाज निकालना, जैसे साँस लेते हैं, ऐसे करना जैसे एक व्यक्ति शब्दों को बार-बार दुहराता है।" दूसरा इब्रानी शब्द है siyach (उच्चारण see-akh सीआख, Strong' 7878), यह शब्द विशेषकर भजनसंहिता 119 में प्रयुक्त हुआ है, जिसका अर्थ है "अपने मन में रखना, बातचीत करना (अपने आप से और जोर से बोलना), कहना, भाषण देना, शिकायत करना, घोषित करना, गम्भीर विचार करना, प्रार्थना करना, भाषण देना, बातें करना" The Spirit Filled Life Bible में पहले शब्द के ऊपर यह टिप्पणी दी गई है: 'Hagah' शब्द कुछ ऐसी वस्तु जो शान्त प्रतीत होती है, को प्रकट करता है जैसे अंग्रेजी भाषा का शब्द Meditation (मनन करना) है, जो एक मानसिक अभ्यास ही हो सकता है। इब्रानी विचार में पवित्रशास्त्र पर मनन करना उनको कोमल, शान्त साथ बाजे की आवाज के दुहराना, बाहरी सभी बाधाओं को पूर्णरूप से त्यागते हुए इसी परम्परा से एक विशेष प्रकार की यहूदी प्रार्थना बनी है जो Davening कहलाती है, जैसे पाठों का उच्चारण करना, लगातार प्रार्थनाऐं करना अथवा परमेश्वर की संगति में लीन हो जाना, झुकते हुए और आगे पीछे हिलते हुए। प्रत्यक्षरुप से यह मनन प्रार्थना का शक्तिशाली तरीका दाऊद के समय की ओर ले जाता है (पृष्ठ 753-754, थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1991)।

मनन करना प्राथमिक रूप से मानवीय आत्मा का कार्य है जो आत्मा (विचार, बुद्धि, कल्पना, अनुभव और इच्छा) में पहुँचती है और भौतिक शरीर को प्रभावित करती है। निर्देशों के उद्देश्यों से हम मनन की क्रिया को संक्षेप में बताना चाहेंगे। इन तीनों शब्दों का प्रयोग करते हुए–चिन्तन, कल्पना करना, अंगीकार करना। एक निश्चित समय पर मनन करते हुए एक व्यक्ति इनमें से एक अथवा अधिक प्रक्रियाओं में शामिल हो सकता है। एक व्यक्ति गहरे चिन्तन में हो सकता है विशेष विषय वस्तु के बारे में अथवा दोनों चिन्तन और कल्पना, विशेष विषय अथवा अंगीकार में शामिल हो सकता है। आइए इनमें से प्रत्येक पर विस्तार से चर्चा करें।

चिन्तन करना–अपने आप में सोचना

"मैं तेरे ऐश्वर्य की महिमा के प्रताप पर, और तेरे अद्‌भुत कार्यों पर ध्यान करूँगा" (भजनसंहिता 143:5)

यह मनन का वह क्षेत्र हैं जहाँ हमारे विचार और बुद्धि दोनों ही कार्य करते हैं। हम एक विशेष विषय के बारे में बोलते, मन में रखते और गहराई से सोचते हैं। उदाहरण के लिए, यदि हम वचन में से एक विशेष विषय पर चिन्तन कर रहे हैं जैसे अलौकिक चंगाई, हमारे पास यशायाह 53:4 वचन का पद है, चिन्तन के दौरान हम इस पद का अर्थ समझते हैं, इसका महत्व और इसे लागू करने के तरीके पर चिन्तन करते हैं। हम पहचानने लगते हैं यीशु ने हमारी सभी बीमारियों और पीड़ाओं को अपने ऊपर उठा लिया। उसने यह सब हमारे स्थान पर किया। अतः अब हमें इन्हें उठाने को आवश्यकता नहीं है। हम इसे समझते हैं और अपने अन्दर तर्क–वितर्क करते हैं। हम अपने दैनिक जीवन में इसे लागू करने की सोचते हैं। हम गलत अर्थ और विचारों का अवलोकन करते हैं जो पहले से हमारे मन में हो सकते हैं और उनको मान्यता देना बन्द कर देते हैं।

हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर का आत्मा हम में आनन्दित होता है। जब हम वचन पर गहन चिन्तन करते हैं और अपने मस्तिष्क

का ध्यान वचन पर मनन करने में लगते हैं, परमेश्वर का आत्मा कोमलता के साथ हमारे विचारों की प्रक्रिया में आ जाता है। वह हमारे विचारों को हमारे मनों में ताजा विचारों और ज्ञान रोपित करने के द्वारा प्रेरित और निर्देशित करता है। यह प्रकट करते हुए कि प्राचीन लोग वचन को लाने में कैसे प्रेरित हुए, प्रेरित पतरस ने कहा: "क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, परन्तु लोग पवित्र आत्मा की प्रेरणा द्वारा परमेश्वर की ओर से बोलते थे" (2 पतरस 1:21)। "प्रेरणा" शब्द यूनानी शब्द के चेमतव (उच्चारण Fer'o Strong's # 5342) से निकला है, जिसका अर्थ है साथ रखना, लेकर आना टपदमे Dictionary में इन पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के विषय में यह टिप्पणी है। "वे इसके साथ लाए गए अथवा पवित्रात्मा की सामर्थ से विवश किये गये, अपनी स्वयं की इच्छा से काम नहीं कर रहे थे, अथवा अपने विचार नहीं प्रकट कर रहे थे, परन्तु जो शब्द उन्हें दिए गए उनके द्वारा परमेश्वर का मस्तिष्क प्रकट कर रहे थे और उसकी सेवा कर रहे थे (पृष्ठ 420ए Thomas Nelson Publishers, 1985)।

ये भविष्यद्वक्ता अपनी समझ से बाहर की बातों को बोल रहे थे यहाँ तक कि उन्हें उन बातों को खोजना पड़ा "वे इस बात की खोज में लगे हुए थे कि मसीह का आत्मा, जो हम में विद्यमान है और जिसने मसीह के दुखों व उसके पश्चात् होने वाली महिमा की भविष्यवाणी की है, वह किस व्यक्ति या किस समय की ओर संकेत कर रहा है (1पतरस 1:11)। ठीक इसी प्रकार से पवित्रात्मा भी हमारे विचारों के साथ आता है जब हम वचन में चिन्तन करते हैं। पवित्रात्मा हमारा शिक्षक है। यीशु ने कहा कि पवित्रात्मा हमें वह बातें बताएगा जो उसने यीशु को कहते सुनी हैं (यूहन्ना 16:12-15)। यह तब होता है जब हम अपने आप को वचन में चिन्तन करने के लिए सब बाधाओं से अलग रखते हैं। ओह! यह कितना महान अनुभव है जब प्रभु का हाथ जो मधुर पवित्रात्मा है हम पर उतरता है और हमारे विचारों में समा जाता है जब हम गहन चिन्तन परमेश्वर के वचन में करते हैं। अधिकांशत: प्रभु की उपस्थिति इतनी तेज हो जाती है कि आनन्द के आँसू और धन्यवाद की

भेंटे हमारे अन्दर से बहने लगती हैं; उस आश्चर्यजनक प्रकाशन और समझ के द्वारा जो हमारे जीवनों में डाला गया है।

चिन्तन हमारी सोच को प्रभावित करता है। यह एक ऐसा मन उत्पन्न करता है जो परमेश्वर के वचन के द्वारा नया होता है। पवित्रशास्त्र हमें सिखाता है तुम्हारे मन के नए हो जाने से (रोमियों 12:2अ)। हमें निर्देश दिया गया अपने मन स्वभाव से नये बनते जाओ (इफिसियों 4:23)। एक व्यक्ति जिसका मन परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति नया होता है (परमेश्वर के सम्पूर्ण वचन) वह यह जान लेता है कि परमेश्वर की भली और भावती और सिद्ध इच्छा क्या है (रोमियों 12:2ब)। परमेश्वर के वचन में अनुशासित मनन चिन्तन अभ्यास के द्वारा ज्ञानेन्द्रियाँ भले और बुरे की पहचान कर लेती हैं (इब्रानियों 5:14ब)।

कल्पना करना- अपने "मन की आँखों" से देखना

"इन बातों के पश्चात् यहोवा का यह वचन दर्शन में अब्राम के पास पहुँचा:'अब्राम, मत डर, मैं तेरी ढाल हूँ: तेरा प्रतिफल अति महान होगा'। अब्राम ने कहा, "हे प्रभु यहोवा, तू मुझे क्या देगा? मैं तो निर्वंश हूँ और मेरे घर का उत्तराधिकारी दमिशक का एलीएजेर होगा और अब्राम ने कहा, "इसलिए कि तूने मुझे कोई सन्तान नहीं दी है, मेरे घर में उत्पन्न एक व्यक्ति मेरा उत्तराधिकारी होगा। तब देखो परमेश्वर का वचन उसके पास पहुँचा, यह मनुष्य तेरा उत्तराधिकारी न होगा"; परन्तु जो तुझे से उत्पन्न होगा वही तेरा उत्तराधिकारी होगा और बाहर ले जाकर उसने उससे कहा अब आकाश की ओर देख और यदि गिन सके तो तारों को गिन। फिर उसने कहा, "तेरा वंश भी ऐसा ही होगा। तब उसने यहोवा पर विश्वास किया और इसे यहोवा ने उसके लिए धार्मिकता गिना" (उत्पत्ति 15:1-6)।

बहुत वर्ष बीत चुके थे तथा परमेश्वर ने पहली बार अब्राम से यह प्रतिज्ञा की कि वह उसको एक महान् राष्ट्र बनाएगा। सारा और अब्राम उस समय तक सन्तान रहित थे और यह उनके लिए चिन्ता की बात थी। इसी समय के दौरान परमेश्वर ने उसे अपनी उसी प्रतिज्ञा के बारे में पुनः निश्चय कराया। हम आप का ध्यान उसी कार्य को ओर आकर्षित करेंगे

जो प्रभु ने किया। एक रात प्रभु अब्राम को उसके घर से बाहर ले गए और उससे कहा कि सितारों से भरे आकाश की ओर देखे और उससे पूछा कि क्या वह सितारों की गिनती कर सकता है। तब उसने अब्राम से कहा: "ऐसे ही तेरे वंश होंगे"। वास्तव में परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा "मानसिक तस्वीर" अब्राम को दे रहा था। अब्राम के पास परमेश्वर की प्रतिज्ञा के पूर्ण होने की तस्वीर थी। वह इसे अपने मन की आँख से परमेश्वर की प्रतिज्ञा को पूरे होते देख रहा था कि वह कैसी है। बाद में परमेश्वर ने इब्राहीम से यह भी कहा, "मैं तेरे वंश को बालू के किनकों के समान बढ़ाऊँगा जो समुद्र के किनारे होती है" (उत्पत्ति 22:17)।

कल्पना करना एक और महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसे हम मनन करने में व्यवहार में लाते हैं। हम अपनी कल्पना की शक्ति से देखते हैं कि परमेश्वर के वचन को समझते हैं जो वह हमें बताना चाहता है। उदाहरण के लिए, यदि हम बीमार हैं, तब हम अपने आपको सीधा खड़ा हुआ और चंगा किया हुआ "देखते" हैं। हम वह सब कुछ देखते और करते हैं जो वचन हमारे विषय में कहता है। कल्पना करना हमारे मनन की क्रिया का वह भाग है जो हमारी कल्पना को व्यस्त रखता है। कलीसिया ने प्राय: कल्पना की सामर्थ की रक्षा करने से इन्कार किया है। दूसरी ओर संसार ने लगातार हमारी कल्पना को सांकेतिक टेलीविजन कार्यक्रमों, और छपे हुए विज्ञापनों ने प्रभावित किया है। कल्पना हमारे जीवन का महत्वपूर्ण भाग है। हमारी कल्पनाऐं हमारे व्यवहार और उन निर्णयों को प्रभावित करतीं हैं जिन्हें हम करते हैं। वे हमारे दृष्टिकोण को प्रभावित करती हैं और हमारे आत्म-सम्मान का निश्चय करती हैं। बहुत से लोग बुरी आत्म-सम्मान की कल्पना अथवा अपने विषय में बुरी कल्पना करने की बीमारी से पीड़ित है, अथवा एक ऐसी कल्पना जो उन्हें अन्य लोगों के डर से बांधे हुए है, अनजाने भय, जोखिम लेने का भय, अथवा एक ऐसी कल्पना जो उन्हें हीनता की भावना से भरती है आदि। तौभी जब हम परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं और चिन्तन (अथवा कल्पना) अपने बारे में करते हैं कि परमेश्वर में हम कौन हैं, हमारी आत्म-कल्पना बदलने लगती है, वास्तव में न केवल हमारी आत्म कल्पना परन्तु हमारा

सम्पूर्ण दृष्टिकोण जीवन के प्रति और हमारे आस-पास की परिस्थितियाँ बदलने लगतीं हैं।

पुराने नियम में गिनती की पुस्तक के 13वें अध्याय में एक बहुत जानी-पहचानी घटना है जो यहाँ पर एक अच्छा उदाहरण प्रकट करती हैं। उनको कनान देश विरासत में देने की प्रतिज्ञा करते हुए, परमेश्वर अपने लोगों को मिस्र की दासता से छुड़ाकर लाया। प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करने की तैयारी करते हुए, परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी कि बारह व्यक्तियों को प्रत्येक गोत्र से एक अगुवा उस देश का भेद लेने के लिए भेजे। इन बारह लोगों ने खोजबीन करने में चालीस दिन व्यतीत किए। तब वे वापस आए और अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। उनमें से सभी इस बात पर सहमत थे कि देश फलदायक और सुहावना है। परन्तु उनमें से दस लोगों को उन लम्बे चौड़े मनुष्यों (राक्षसों) से डर लगा जो उसमें रहते थे। उन्होंने कहा: "हम उन पर चढ़ाई नहीं कर सकते क्योंकि वे हमसे अधिक बलवान हैं।" अत: जिस देश का भेद लेने वे गए थे उसका उन्होंने यह कर भयावह चित्र प्रस्तुत किया भेद लेने के लिए हम जिस देश में गए हैं। वह ऐसा देश है जो अपने ही निवासियों को निगल जाता है तथा जितने मनुष्य हमने वहाँ देखे वे सब बड़े डील-डौल के थे।.हम तो अपनी दृष्टि में उनके सामने टिड्डियों के समान लगते थे, और उनकी दृष्टि में भी ऐसे ही लगते थे" (पद 31-33)। उनमें से केवल दो व्यक्ति ही सकारात्मक रिर्पोट लाए और कहा: "तब कालेब ने मूसा के सामने लोगों को चुप कराया और कहा, हम तुरन्त चढ़कर उसे अपने अधिकार में कर लें क्योंकि हम अवश्य विजयी होंगे" (पद 30)। इन बारहों व्यक्तियों ने वे सब वस्तुऐं एक समान देखीं होंगी लेकिन इन सब का दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न था। उनमें से दो निश्चित थे, क्योंकि उनको यह स्मरण था कि परमेश्वर उनके साथ था (गिनती 14:6-9)। अन्य दस व्यक्तियों ने नकारात्मक कल्पनाओं को अपने ऊपर प्रबल होने दिया। जो कुछ उन्होंने अपनी मन की आँखों से देखी उसी ने उन्हें दुर्बल कर दिया। उन्होंने अपने आप को इन राक्षकों के सामने टिड्डी के समान बनाया। इससे उनके अन्दर भय समा गया यहाँ तक कि परमेश्वर में

उनके विश्वास को भी छीन लिया। दु:ख की बात है, कई मसीही लोग अपने जीवनों में इन्हीं दस लोगों के समान परिस्थितियों से होकर गुजरते हैं। जो कुछ वे अपने मन की आँखों से देखते हैं, उनकी कल्पनाऐं उनको विश्वास का जीवन जीने से रोकतीं है और परमेश्वर की भरपूरी की आशीषों का आनन्द उठाने से रोकतीं है। तौभी मनन के अनुशासन के द्वारा हम अपनी कल्पनाओं की दीवारों पर नई तस्वीर बनाने के योग्य बन जाते हैं।

यह रुचिकर बात है कि वचन में बहुत से स्थानों पर, विशेष कर पुराने नियम में, परमेश्वर उसके द्वारा व्यवहार करता है जो हम देखते हैं। उसने अपनी वाचा के लोगों को पुराने नियम में एक आज्ञा दी और कहा: "इसलिए तुम मेरे इन वचनों को अपने हृदय और अपने प्राण में धारण करना तथा उनको अपने हाथों पर चिन्ह स्वरूप बाँधना तथा वे तुम्हारी आँखों के बीच टीके का काम दें" (व्यवस्थाविवरण 11:18, व्यवस्था विवरण 6:8, निर्गमन 13:9,16 भी देखें)। एक समय लोग वास्तव में इसका अभ्यास करते थे, वचन के भागों को अपने बाएँ हाथ में तथा माथे के चारों ओर बाँधकर "चिन्ह" शब्द का एक अर्थ है "देखने योग्य उदाहरण"। परमश्वेर चाहता था कि उसके लोगों के पास एक दिखने वाला, वचन, याद दिलाने वाला चिन्ह हो। परमेश्वर उसे प्रभावित करना चाहता था जो वे देखते थे। क्योंकि जो वह देखेंगे वह उनकी यादगार को पुन: ताजा करेगा (यादगार > हमारी कल्पना का वह द्वार जो हमें भूतकाल में ले जाता है), ताकि हम परमेश्वर के कार्यो को याद करें। यद्यपि ऐसा अभ्यास हम नए नियम में नहीं पाते, हम पाते हैं कि हम परमेश्वर का वचन "अपनी कल्पनाओं की दीवारों पर छापें" ताकि हम लगातार उन्हें देखते रहें और परमेश्वर की बहुमूल्य प्रतिज्ञाओं को याद करते रहें। पुराने नियम के एक जाने-पहचाने भाग में परमेश्वर कहते हैं: "मेरे पुत्र, मेरे वचनों पर ध्यान दें और मेरी बातों पर अपना कान लगा। अपनी दृष्टि से उन्हें ओझल न होने दे" (नीतिवचन 4:20,21)। एक बार फिर हम एक निर्देश पाते हैं जो परमेश्वर के वचन को लगातार "देखने" की महत्वता के विषय में बताता है। हम विश्वास करते हैं कि एक प्रकार से यह उस

बात को बताता है जो हम अपने मन में कल्पना करते हैं, देखते हैं और तस्वीर बनाते हैं।

अंगीकार करना- वह कहना जो परमेश्वर ने कहा है

"व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे मुँह से कभी दूर न हो परन्तु इस पर दिन-रात ध्यान करते रहना जिससे तू उसमें लिखी हुई बातों के अनुसार आचरण करने के लिए सावधान रह सके। तब तू अपने मार्ग को सफल बना सकेगा और सफलता प्राप्त करेगा" (यहोशू 1:8)।

ऊपर के पद में जब प्रभु यहोशू को आज्ञा दे रहा था कि वह दिन रात मनन करे तो देखिए वह यह कहते हुए आरम्भ करता है "व्यवस्था की पुस्तक तेरे मुँह से अलग न होने पाए....." दूसरे शब्दों में प्रभु यहोशू को बता रहा था कि जो वचन व्यवस्था की पुस्तक में लिखे हैं वे लगातार उसकी बोलचाल के भाग बने रहें। अतः मनन की प्रक्रिया के साथ-साथ हमें पवित्रशास्त्र के वचनों को "अपने" मुँह में रखना है। जैसा हमने अध्ययन के प्रथम भाग में व्याख्यान किया है, यह अभ्यास इब्रानी लोगों के द्वारा किया जाता था। मनन के दौरान वे चुपचाप वचन के भागों को कोमल और गुनगुनाती आवाज में दोहराते थे और आगे पीछे होते हुए वे बाहरी बाधाओं को दूर करते थे।

नए नियम में हमें "अंगीकार" और "अंगीकार करना" शब्दों से परिचय कराया गया है। ये शब्द मसीही विश्वास में बहुत महत्वपूर्ण हैं। उद्धार तभी हमारे लिए वास्तविकता बनता है जब हम अपने मुँह से यह अंगीकार करते हैं कि यीशु प्रभु है और अपने हृदय में विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया (रोमियों 10:9)। आगे, नया नियम हमें अपने पापों को अंगीकार करने के बारे में सिखाता है (1 यूहन्ना 1:9), अपने विश्वास के अंगीकार के बारे में (इब्रानियों 3:1) दो यूनानी शब्दों मे से जो "अंगीकार" अथवा "अंगीकार करना" शब्दों का अनुवाद है वह है homologeo (उच्चारण hom-ol-og-eh'- Strong's # 3670), यह शब्द अधिकांश प्रयुक्त हुआ है जिसका वास्तविक अर्थ है "वही बात बोलना, स्वीकार करना, मिलान करना,

सहमत होना"। हम मनन के इस तीसरे क्षेत्र को स्पष्ट करने के लिए "अंगीकार" शब्द का प्रयोग करना चाहेंगे। क्योंकि जब परमेश्वर हमें आज्ञा देता है कि हम उसका वचन दोहराऐं, वाँचें, बोलें, तब वह वास्तव में यह आज्ञा देता है कि हम उसके वचन का "अंगीकार" करें। वह हमें बता रहा है कि हम "वही बातें बोलें" वही कहें जो वचन कहता है। हमारे वचन "उसके वचनों से सहमत हों"।

उदाहरण के लिए, हम वचन पर, विशेष रूप से यशायाह 53:4 और मत्ती 8:17 पर मनन कर रहे हैं। ये पद हमें बताते हैं कि कैसे क्रूस पर मसीह की मृत्यु के द्वारा हमें चंगाई मिली है। हम इस बात पर चिन्तन करते हैं कि ये पद हमारे जीवन में कैसे लागू होते हैं। हम इन वचनों को अपने जीवनों में सत्य होते हुए देखते हैं हम कल्पना करते हैं और अपने आप को बीमारी से मुक्त होते हुए, दर्द से चंगा होते हुए और पूर्ण स्वस्थ होते हुए पाते हैं। मनन के एक भाग होने के कारण हम इन पदों का अंगीकार करते हैं। हम कोमल और सुनने योग्य आवाज में कहते हैं। "निश्चय उसने हमारे सारे रोगों को सह लिया और मेरे दर्द को ले लिया और मेरी बीमारियों को सह लिया।" हम यह अनेक बार दुहराते हैं। अथवा हम अपने आप से बोलना चाहेंगे कि इन वचनों को क्या अर्थ है। जब मैं मनन करता हूँ। तब कभी–कभी मैं अपने आपको वचन का "प्रचार" कर सकता हूँ। दूसरे समयों में मैं प्रार्थना में इन वचनों का अंगीकार कर सकता हूँ। उदाहरण के लिए, जब हम इन पदों पर मनन करते हैं तो हम प्रार्थना करके कह सकते हैं: "पिताजी मैं आपके वचन के लिए धन्यवाद देता हूँ। पिता जी धन्यवाद क्योंकि इन पदों के अनुसार निश्चय यीशु ने मेरी सब बीमारियों को सह लिया और मेरे दर्दों को ले लिया। उसने मेरी सब बीमारियों को सह लिया और मेरी दुर्बलताओं को ले लिया। पिताजी धन्यवाद, अब मुझे अपनी देह में बीमारी और रोगों को सहने की आवश्यकता नहीं है।"

इस प्रकार से वचन के अंगीकार करने से हमारे जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। यह हमारे अन्दर के व्यक्तित्व पर परमेश्वर का वचन प्रवाहित करता है। हमारा विश्वास बढ़ाता है क्योंकि विश्वास परमेश्वर

के वचन को सुनने से आता है (रोमियों 10:17)। जब हम इस प्रकार से परमश्ेवर के वचन का अंगीकार करते हैं हम वास्तव में वचन को सुनते हैं। वचन के लगातार अंगीकार करने का अभ्यास निश्चय ही हमारे बोलने के तरीके को बदल देगा। बल्कि जब परमेश्वर हमें आज्ञा देता है कि हम उसके वचन को लगातार अपने मुँह में रखें। इसका अर्थ है कि प्रत्येक वह बात जो उसके वचन का विरोधाभास करती है वह हमारे बोलचाल का भाग नहीं होनी चाहिए।

[कृपया ध्यान दीजिये कि अंगीकार के विषय में बहुत से अन्य क्षेत्र हैं जो नए नियम में सिखाए गए हैं जिनका हम यहाँ व्याख्यान नहीं कर रहे हैं]।

वचन आपके निकट है

" जो आज्ञा तुझे देता हूँ वह न तो तेरे लिए बहुत कठिन है न तुझसे परे है। यह स्वर्ग में नहीं है कि तू कहे कौन स्वर्ग पर चढ़कर उसे हमारे लिए उतार लाएगा तथा हमें सुनाएगा कि हम उसका पालन करें? न वह समुद्रपार है कि तू कहे कौन समुद्र-पार जाकर उसे हमारे लिए लाएगा तथा हमें सुनाएगा कि हम उसका पालन करें? परन्तु यह वचन तेरे अति निकट, वरन् तेरे मुँह तथा तेरे मन ही में है कि तू उसका पालन करे" (व्यवस्थाविवरण 30:11-14)।

वचन सदैव हमारे पास है यदि हमने इस अपने हृदय में रखने का साहस किया है। हमारा हृदय एक बड़े भण्डार के समान है जहाँ हम परमेश्वर के वचन को जमा कर सकते हैं। जब हम अपने आपको अनुशासित करके वचन में मनन करते हैं और उसके वचन को अपने हृदय में रखते हैं तो हमें उसके वचन को कहीं भी, कभी भी प्रयोग कर सकते हैं। हम अपने मुँह से वचनों को बोलकर, हम अपने हृदयों में संचित वचन को अपने मुँह से बोलकर निकाल सकते हैं। हम वह बोलते हैं जो हमने अपने हृदय में जमा किया है। जब वचन हमारे मुँह और हृदय में समाया रहता है तब वह हमारे "बहुत निकट" रहता है। यह हमें इस योग्य बनाता है कि हम परमेश्वर के वचन पर किसी भी स्थान पर, कभी भी मनन कर सकें। प्राय: हम चाहेंगे कि हमें एक शान्त स्थान मिले

जहाँ किसी प्रकार की बाधाऐं न हों बल्कि हम वहाँ बैठकर बाइबल को अपने सामने खुला रख कर मनन कर सकें। तौभी यदि हमने उसके वचन को अपने हृदयों में रखा है तब हम व्यस्त सड़क पर चलते हुए, राजमार्ग पर गाड़ी चलाते समय मनन कर सकते हैं। कई अवसरों पर चाहे मैं लेटा हुआ होता हूँ अथवा बाजार से गुजरता हूँ, अथवा काम पर जाते हुए परमेश्वर के वचन पर मनन करता हूँ। मैं अपना ध्यान वचन के किसी एक भाग पर अथवा अन्य भागों पर, अथवा किसी विशेष विषयवस्तु पर जो वचन में बताई गई है लगाता हूँ। मैं इन तीनों क्षेत्रों, मनन करना, कल्पना करना और अंगीकार करने में से कोई भी प्रक्रिया प्रयोग कर सकता हूँ जब मैं किसी विशेष समय में मनन करता हूँ।

मनन में बाइबल का उद्देश्य

"हे परमेश्वर तू ही मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे यत्न से ढूँढूगा; सूखी और प्यासी हाँ निर्जल भूमि पर मेरा प्राण तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है। इस प्रकार मैंने पवित्र स्थान में तुझ पर दृष्टि की, कि तेरे सामर्थ और तेरी महिमा को देखूँ, क्योंकि तेरी करूणा जीवन से भी उत्तम है, मेरे होंठ तेरी प्रशंसा करेंगे। इसी प्रकार मैं जीवन भर तझे धन्य कहता रहूँगा, तेरा नाम लेकर अपने हाथ उठाऊँगा मेरा प्राण मानों चर्बी और चिकनाई से तृप्त हुआ है और मेरा मुँह हर्षित होठों से तेरी स्तुति करता है, जब मैं अपने बिछौने पर पड़ा तुझे स्मरण करता हूँ, तो रात के हर पहर तुझ पर ध्यान करता हूँ" (भजनसंहिता 63:1-6)।

बाइबल के अनुसार मनन प्रभु के साथ एक सम्बन्ध है। भजनकार ऊपर दिए गए भाग में परमेश्वर के लिए तीव्र इच्छा प्रकट करता है। उसकी इच्छा ने उसे परमेश्वर को उसके मनन में खोजने को विवश किया और उसे अपने हाथों को उठाकर आनन्द से अपने होठों से प्रभु की स्तुति करने के लिए प्रेरित किया। इसने उसे विवश किया कि वह रात के शान्त समय में प्रभु पर मनन करे। इसी प्रकार से प्रभु के साथ एक हो जाने की अपनी हार्दिक तीव्र इच्छा के द्वारा हम अपने विचारों और वाणी को अनुमति देते हैं कि प्रभु पर पूर्ण रूप से केन्द्रित करें। जैसे हम वचन में मनन करते हुए गहराई में पहुँचते हैं तब हम अपनी बुद्धि

से वचन का विश्लेषण नहीं करते बल्कि परमेश्वर से बातें करते हैं। तब वचन "आत्मा और जीवन" बन जाता है और चुस्त और सामर्थ देने वाला बन जाता है। यह ऐसा वचन बन जाता है जैसे कि परमेश्वर हमसे सीधे रुप में वर्तमान में बोल रहा है। यह एक ऐसा समय बन जाता है जब प्रभु हमारे अन्दर काम करता है, हमें अन्दर से अपने सामर्थी वचन के द्वारा परिवर्तित करता है। इसी समय के दौरान हम परमेश्वर की बातों और कामों के विषय में जो वह हमारे जीवन में करता है, प्रत्युत्तर देने के योग्य बन जाते हैं। हम पश्चाताप्, विश्वास, आनन्द, प्रशंसा और आभार उसके वचन के आधार पर प्रकट करने के योग्य बनते हैं। चाहे गहन प्रार्थनाओं अथवा फुसफुसाने वाले शब्दों अथवा दृढ़ता से किए गए अंगीकारों के द्वारा हम अपने विचार, भावनाएं, इच्छाएं और दृढ़ विश्वास प्रभु के प्रति प्रकट करते हैं। यह मधुर संगति का समय होता है।

मनन के प्रभाव

"क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते हैं, तथापि हम शरीर के अनुसार युद्ध नहीं करते। क्योंकि हमारे युद्ध के हथिसार शारीरिक नहीं परन्तु गढ़ों को ध्वस्त करने के लिए ईश्वरीय सामर्थ से परिपूर्ण हैं। हम परमेश्वर के ज्ञान के विरुद्ध उठने वाली कल्पनाओं और प्रत्येक अवरोध का खण्डन करते हैं, और प्रत्येक विचार को बन्दी बनाकर मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं" (2 कुरिन्थियों 10:3-5)।

एक मसीही को बहुत सी चुनौतियों से संघर्ष करना पड़ता है जिनकी सूची उपर्युक्त भाग में दी गई है। यह है "दृढ़ गढ़," "वाद-विवाद", "प्रत्येक ऊँची बात जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है", "प्रत्येक विचार" आदि। यद्यपि हम इनमें से प्रत्येक पर टिप्पणी नहीं करेंगे, हम यहाँ यह स्पष्ट करना चाहेंगे कि ये सभी क्षेत्र मसीही व्यक्ति के मस्तिष्क से सम्बन्धित हैं। एक मसीही व्यक्ति का मस्तिष्क एक युद्ध का मैदान है। परमेश्वर ने हमें हथियार दिए हैं कि हम सफलता पूर्वक युद्ध करें ताकि हम इन सभी संघर्षों के क्षेत्रों में विजय प्राप्त करें। परन्तु समस्या यह है कि बहुत से मसीही लोग जो विश्वास में पैदा हुए हैं, लगातार दृढ़ गढ़ों, कल्पना, तर्क-वितर्कों और विचारों में बने रहते हैं जो

परमेश्वर के ज्ञान के विरोध में हैं (जैसे परमेश्वर के लिखित वचन में दिए गए हैं)। परिणामस्वरूप बहुत से लोग हारकर अपने जीवन के क्षेत्रों में बन्धन में जीवन जीते हैं।

वचन में मनन करना, यद्यपि विभिन्न चुनौतियों जिनका एक मसीही व्यक्ति सामना करता है, समाधान नहीं है। परन्तु यह एक बहुत महत्वपूर्ण अनुशासन है जिसके द्वारा एक मसीही व्यक्ति को ऊपर लिखे गए उसके मन में होने वाले सभी संघर्षों से लड़ने में सहायक होता है। दृढ़ गढ़ वचन में अनुशासित मनन करने के द्वारा ढाए जा सकते हैं। एक व्यक्ति जो परमेश्वर के वचन पर चिन्तन करता है उसके लिए आसान हो जाता है कि वह कल्पनाओं, तर्कों और विचारों को परमेश्वर के ज्ञान का आज्ञाकारी बना दें (परमश्ेवर के वचन का)।

वचन में लगातार मनन करने का फल नया मन, नयी बोली और नया विश्वास होता है। हमारा सोचने का तरीका, हमारी आत्म–पहचान, आत्म–सम्मान और हमारे व्यक्तित्व के क्षेत्र, जो हमारे मस्तिष्क पर निर्भर हैं, बदलने लगते हैं। अपने जीवन और भविष्य के बारे में हम सकारात्मक, निश्चिन्त और आशावान बनने लगते हैं। यदि हमारे पास दर्शन नहीं है तब प्रभु हमें ऊपर उठाता है कि हम साहसी बन कर स्वप्न देखें। हम एक नई शब्दकोष की भाषा बोलने लगते हैं। हम निर्धनता, पराजय और आत्म–दया की बातों के बजाए परमेश्वर के अपने दृढ़ विश्वास को बोलते हैं। मनन करने के द्वारा अपने हृदयों में लगातार वचन को बोने और सींचने के फलस्वरूप हममें एक चमकता हुआ विश्वास उत्पन्न होता है।

मनन के फल

"क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो दुष्टों की सम्मति पर नहीं चलता, न पापियों के मार्ग में खड़ा होता, और न ठट्ठा करने वालों की बैठक में बैठता है। परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से आनन्दित होता और उसकी व्यवस्था पर रात–दिन मनन करता रहता है। वह उस वृक्ष के समान हैं जो जलधाराओं के किनारे लगाया गया

है और अपनी ऋतु में फलता है और जिसके पत्ते कभी मुझाते नहीं। इसलिए जो कुछ वह मनुष्य करता है वह उसमें सफल होता है" (भजनसंहिता 1:1–3)।

परमेश्वर का वचन चमत्कारी बीज है। इसके अन्दर उत्पन्न करने की क्षमता है। वचन का बीज, जब हमारे हृदयों में बोया जाता है तब वह परमेश्वर का आनन्द हमारे जीवनों में पूरा करवाता है। यह मनन क्रिया के द्वारा ही सम्भव होता है जब हम परमेश्वर के वचन को अपने हृदयों में बोते हैं। यह अंकुरित होकर ठीक समय पर फल लाएगा। अतः मनन की लगातार प्रक्रिया का अभ्यास परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को वास्तविकता में बदलने के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

उनमें से कुछ फलों पर विचार करें जो परमेश्वर का वचन हमारे जीवनों में उत्पन्न कर सकता है। वचन शुद्ध बीज है जो आत्मा के कार्य के साथ मिलकर हमारे जीवनों में नया जन्म लाता है (1 पतरस 1:23)। वचन एक औषधि है जो हमारे शरीर के सभी अंगों में चंगाई ला सकता है (नीतिवचन 4:20–22, भजनसंहिता 107:20)। परमेश्वर के वचन में प्रवेश करने से ज्ञान, समझ और बुद्धि आती है (भजनसंहिता 119:98–110,130)। वचन सम्पन्नता और सफलता लाता है (यहोशू 1:8, भजनसंहिता 1:3)। वचन से आत्मिक उन्नति और परिपक्वता आती है (प्रेरितों के काम 20:32)। इसके अतिरिक्त बहुत सी आशीषें हैं जो उसने हमें अपने वचन में दी हैं। यह सब हमारे जीवनों में उत्पन्न हो सकतीं हैं यदि हम इन बीजों को मनन के द्वारा अपने जीवनों में बोएं और उचित रुप से देखभाल करें।

एक व्यक्ति जो भक्ति का जीवन व्यतीत करता है और लगातार परमेश्वर के वचन में मनन करता है, वह एक ऐसे वृक्ष के समान है जो नदी के किनारे लगाया गया। उसकी जड़ें ऐसे स्थान तक जुड़ी हुई हैं जहाँ से उसे निरन्तर भोजन और ताजगी प्राप्त होती रहती है। यही होता है जब हम परमश्वेर के वचन में लगातार मनन करते हैं। हमारी आत्मा की जड़े अनन्त भोजन और ताजगी से जुड़ी हुई हैं। हमारे जीवन फलदायक और उत्पादनशील बन जाते हैं।

मनन का अनुशासन विकसित करना

एक दैनिक अनुशासन

"अहा! मैं तेरी व्यवस्था से कितनी प्रीति रखता हूँ कि दिनभर मेरा ध्यान उसी पर टिका रहता है" (भजनसंहिता 119:97)।

हम आपको प्रोत्साहित करना चाहते हैं कि आप परमेश्वर के वचन पर मनन करने के लिए एक दैनिक अनुशासन विकसित करें। इसे एक आदत बनाएं बल्कि एक भक्ति की "लत" बनाएं। वचन में मनन करना एक अनुशासन है, जिसका अर्थ यह है कि हम इसे करते हैं चाहे ऐसा करने की हमारी इच्छा न हो अथवा हम इसे करने के लिए बहुत व्यस्त हों। दूसरी ओर हम परमेश्वर के वचन में पूर्ण आनन्दित होकर ऐसा करते हैं। हम प्रभु को प्यार करते हैं और इसलिए उसके वचन में आनन्दित होते हैं। यह हमें ऐसे समयों में ले जाता है जहाँ हम मनन के द्वारा परमेश्वर के वचन पर बिना किसी बाधा के पूरा ध्यान देते हैं।

विशेष आवश्यकता के समय में

"यद्यपि प्रधान बैठकर मेरे विरुद्ध बातें किया करते हैं फिर भी तेरा दास तेरी विधियों पर मनन करता है। तेरी चेतावनियाँ तो मेरा आनन्द है; वे मेरी सलाहकार हैं अंहकारी लज्जित हों क्योंकि वे छल से मुझे हानि पहुँचाते हैं, परन्तु मैं तो तेरे उपेदशों पर मनन करूँगा" (भजनसंहिता 119:23,24,78)।

मेरे जीवन में ऐसे बहुत से समय आए, और अभी भी आते हैं जब मैं विभिन्न चुनौतियों, प्रश्नों और चिन्ताओं का सामना करता हूँ। ऐसे समयों में आत्मा में प्रार्थना करने के अतिरिक्त मैं वचन के उन भागों पर मनन करता हूँ जो विशेष समस्या को संबोधित करते हैं। मेरा मस्तिष्क संदेहपूर्ण प्रश्नों से भरा हुआ और अनिश्चितता से पूर्ण आदि हो सकता है, परन्तु मैं पवित्रशास्त्र के वचनों में जाता हूँ जो परमेश्वर के विचारों को उस विषय पर प्रकट करते हैं। मैं उन पर मनन करता हूँ। यह मेरे हृदय

में शान्ति, सान्त्वना और निश्चयता लाती है। दूसरे समयों पर मैं अन्य चुनौती स्वीकार करता हूँ। मैं जानता हूँ कि मुझे प्रभु से अतिरिक्त सामर्थ और प्रोत्साहन लेना पड़ेगा। ऐसे समयों में मैं फिर वचन की ओर फिरता हूँ जो उस चुनौती के लिए आवश्यक है, और उन पर मनन करता हूँ। यह वचन विश्वास और सामर्थ को स्त्रोत बन जाता है। हम में से प्रत्येक इस आशीष का लाभ उठा सकते हैं।

उद्देश्य सहित अभ्यास

"मेरी आँखे तो रात के हर पहर से पहले ही खुल जाती हैं, कि मैं तेरे वचन पर मनन करूँ" (भजनसंहिता 119:148)।

वचन में मनन करना व्यर्थ का अभ्यास नहीं है, ना ही यह केवल उन लोगों के लिए है जो आत्मिक गहराई में पहुँच गए हैं। यह हम सबके अभ्यास के लिये हैं। ऐसे संसार में (यहाँ तक मसीही संसार में भी) जहाँ तुरन्त और शीघ्र चमत्कारों को प्राथमिकता दी जाती है, वहाँ आत्मिक अनुशासन के विकास करने के विषय को उतनी प्रसिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती। तौभी हम अपने आप को आत्मिक वस्तुओं में व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं (1 तीमुथियुस 4:7)। अभ्यास एक अनुशासन है। ऐसा समय आ सकता है जब अनुशासन (आत्म-अनुशासन) आसान काम नहीं होगा। यह कुछ बलिदान की भी माँग कर सकता है। तौभी अनुशासन के इनाम उपयोगी और सदैव ठहरने वाले होंगे। काश! आप उनमें से एक हों जो वचन पर मनन करते हुए आनन्द उठाएें और ऐसा करने का उपयुक्त फल पाएें!

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट "ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव
अपनी बुलाहट से समझौता न करें
आशा न छोड़ें
परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना
परमेश्वर एक भला परमेश्वर है
परमेश्वर का वचन
सच्चाई
हमारा छुटकारा
समर्पण की सामर्थ
हम भिन्न हैं
कार्यस्थल पर महिलाएं
जागृति में कलीसिया
प्रत्येक काम का एक समय
आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान
पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना
अपने पास्टर की कैसे सहायता करें
कलह रहित जीवन जीना
एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है
परिशद्ध करने वाले की आग
व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्ध्नों को तोड़ना
आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना
राज्य का निर्माण करने वाले
खुला हुआ स्वर्ग
हम मसीह में कौन हैं
ईश्वरीय कृपा
परमेश्वर का राज्य
शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था
मन की जीत
जड़ पर कुल्हाडी रखना
परमेश्वर की उपस्थिति
काम के प्रति बाइबल का रवैया
ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा
अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ
प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ऑण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।

- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

नोट्स

हमारे मसीही जीवन में एक बहुत महत्त्वपूण तत्त्व है, एक इतना महत्त्वपूर्ण जो हमारे मसीही जीवन के अनुभव की गुणवत्ता को निश्चित करता है। वह परमेश्वर का वचन है। चाहे हम विजय में चलें अथवा न चलें और आशीष के परिणाम जिन्हें हम अनुभव करते हैं, परमेश्वर के वचन के द्वारा प्रभावित होते हैं जिसे हम स्वीकार करने के योग्य और लगातार अपने प्रतिदिन के जीवन में लागू करते हैं।

यह सत्य है कि आरम्भ में वचन जीवन रहित प्रतीत हो सकता है बल्कि यहाँ सरसरी तौर से पढ़ने वाले को बोरिंग लग सकता है। परन्तु उन लोगों के लिए जो इसकी विरासत की सामर्थ्य और उस स्थान को जो परमेश्वर ने स्वयं अपने वचन को अपने लोगों के जीवन में स्थापित होने के लिए दिया है, उनके लिए वचन जीवित है। उन्होंने अपने सम्पूर्ण वर्तमान और भविष्य को इस बात पर निर्भर कर दिया है जो परमेश्वर का वचन कहता है। जीवन के तूफानों के मध्य वे जानते हैं कि वचन उनको जीवित रखेगा और उन्हें थामे रहेगा। बीमारी के मध्य वे जानते हैं कि वचन चंगाई और छुटकारा लाएगा, चुनौतियों और दवाबों के मध्य वह विश्वास के साथ खड़े होते हैं उस बात पर जो वचन प्रतिज्ञा और एक दृढ़ एवं अटल समर्पण उत्पन्न किया है।

हमारे हृदय की इच्छा यह है कि आप में से प्रत्येक, जिन तक हम इन लिखे हुए पृष्ठों के द्वारा पहुँच सकते हैं, ऐसे स्थान तक प्रभु के साथ लाए जाएं। यदि आपने कुछ अंश तक परमेश्वर के वचन की समझ प्राप्त कर ली है तो हमारी इच्छा है कि आप और सुदृढ़ और उत्साहित हों।

आशीष रायचूर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org